मार्च-२०२५ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
मार्च-२०२५

बहरे शासन को अपनी,
आवाज सुनानी होती है।
अपना राज हमारा हक,
यह बात बतानी होती है।
स्वराज्य हेतु पुरुषार्थ करो,
अरु करो प्रार्थना प्रभु से।
सत्यार्थ प्रकाश की ये बातें,
जन-जन को बतानी होती हैं ।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५

१६१

शुद्धता की कसौटी पर खरे।

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

अच्छे स्वभाव और सेवाभाव से सम्भव है सबको अपना बना लेना

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

March - 2025

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २१

०४ वेद सुधा

११ सत्यार्थ मित्र बनें

१४ भगत सिंह और उनके विचार

१९ वैदिक धर्म

२२ भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठ

२५ स्वास्थ्य- CORONARY STENOSIS

२७ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

हलचल ३०

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक - ११

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनाव धोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः॥ - यजु २४/१

इस मन्त्र का ऋषि प्रजापति है। (प्रजापतिः = आनुष्टुभः प्रजापतिः (तै.ब्रा.३/३/२/२), प्रजापतिर्गार्हपत्यः (कौ. २७/४), प्रजापतिर्वै हिरण्यगर्भः (श.६/२/२/५) इसका अर्थ है कि विशाल खगोलीय मेघ के केन्द्रीय भाग के बाहरी विशाल भाग में विद्यमान अनुष्टुप् छन्द रश्मियों से उत्पन्न अथवा उनके मध्य विद्यमान सूक्ष्म रश्मि विशेष से इस छन्द रश्मि की उत्पत्ति होती है। इसका देवता प्रजापति एवं छन्द भुरिक् संकृति होने से इसके दैवत व छान्दस प्रभाव से विशाल खगोलीय मेघ के विशाल भाग में नाना प्रकार की धारणादि क्रियाएँ सम्यक् रूपेण होने लगती हैं। इसका भाष्य इस प्रकार है-

आधिदैविक भाष्य- (अश्वः, तूपरः, गोमृगः, ते, प्राजापत्याः) {(तूपरः = यतूपरस्तदश्वानाम् (रूपम्) (जै.२/३७२), गोमृगः= नैष ग्राम्यः पशुर्नारण्यो यद् गोमृगः (तै.सं. २/१०/२)} तीव्र हिंसक एवं आशुगामी तरंगें वा रश्मियाँ तथा ऐसी रश्मियाँ, जो न तो ग्राम्य अर्थात् न तो संघात को प्राप्त होकर अन्य पदार्थों को जन्म देती हैं और न आरण्य हैं अर्थात् न ऐसी हैं कि उनका किसी अन्य रश्मि वा कण आदि से संगम ही नहीं होता, प्राजापत्या अर्थात् प्रजापति देवता वाली होती हैं। इसका अर्थ यह है कि ऐसी रश्मियाँ वा तरंगें प्रजापतिरूप सूर्यादि लोकों में ही, विशेषकर बाहरी विशाल भाग में होती हैं। प्रजापति के विषय में महर्षि याज्ञवल्क्य का कथन है- 'यत्परं भाः प्रजापतिर्वा स इन्द्रो वा (श.२/३/१/७)।' इससे संकेत मिलता है कि सूर्य के सर्वाधिक तेजस्वी बाहरी भाग में भी इसी प्रकार की रश्मियाँ वा तरंगें विद्यमान होती हैं। (कृष्णग्रीवः, आग्नेयः) {(ग्रीवा= ग्रीवा उष्णिहः (श. ८/६/२/११), ग्रीवा गिरतेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा (निरु. २/२८)} ऐसी उष्णिक् छन्द रश्मियाँ, जो पदार्थों को आकर्षित करने व निगलने में विशेष सक्रिय होती हैं, अग्नि देवता वाली होती हैं। इसका अर्थ यह है कि ये आकर्षण बल सम्पन्न रश्मियाँ अग्नि से विशेष समृद्ध क्षेत्र में विद्यमान होती हैं अथवा अग्नि को उत्पन्न करने वाली होती हैं। (रराटे, पुरस्तात्, सारस्वती, मेषी) {(रराटः = ललाटः = लल ईप्सायाम् + अच् गतौ + अण्। (आप्टेवकोष), ललम् = ईप्साम् अटति ज्ञापयतीति ललाटम्। मेषः= मेषो मेषतेः (निरु. ३/१६)। सरस्वती= अथ यत्स्फूर्जयन् वाचमिव वदन् तदस्य {अग्नेः} सारस्वतं रूपम् (ऐ. ३/४)} पूर्वोक्त अग्नियुक्त पूर्वोक्त पदार्थ में आकर्षण बल की समृद्धि होने लगती है, उस समय पदार्थ एक-दूसरे के साथ स्पर्धा करने वाले होता है। इसका अर्थ है कि विभिन्न पदार्थों में पारस्परिक संघर्षण की क्रिया तेज होने लगती है। वे कण एक-दूसरे पर बलों का सेचन करते हुए अर्थात् टक्कर मारते हुए तीव्र ज्वालायुक्त एवं नाना प्रकार के उच्च घोषों को उत्पन्न करने वाले अग्नि को उत्पन्न करते हैं। इसका तात्पर्य है कि पूर्व में उत्पन्न अग्नि तीव्र ज्वाला व ध्वनियुक्त होने लगता है। (अधस्तात्, हन्वोः) {(अधा= अथ इति (निरु. ३/३)। हनुः = हनुर्हन्ते (निरु. ६/१७), हनुभ्यां प्रीणामि (मै. ३/१५/१, काठ. ५३/२), हनू अधिषवणे (मै. ३/८/८)। वाजः = बलनाम (निघं. २/९), अन्ननाम (निघं. ११/२६)} तदनन्तर मारक एवं प्रापक गुणों से युक्त दो प्रकार के बलों की समृद्धि होती है। इन बलों के द्वारा नाना प्रकार के कण उत्सर्जित होकर अग्रिम प्रक्रिया के लिए समर्थ होने लगते हैं। इस समय कणों की गति भी बढ़ने लगती है। इससे कणों की यजन प्रक्रिया भी तीव्र होने लगती है। वे एक-दूसरे से टकराते, दौड़ते व संयुक्त होने लगते हैं। (अश्विनौ, अधोरामौ, बाह्वोः) (अश्विनौ = अथ यदेनं (अग्निम्) द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यामरणीभ्यां मन्थन्ति द्वौ वा अश्विनौ तदस्याश्विनं रूपम् (ऐ. ३/४)। अधोरामः= अधस्ताद् रामः अधस्तात्

कृष्णः (निरु. १२/१४)। बाहूः= बाहू कस्मात्? प्रबाधत आभ्यां कर्माणि (निरु.२.७) अरणी = देवरथो वा अरणी (कौ.१.५)) विभिन्न देवकणों का वहन करने वाले दो प्रकार के बाहुरूप बलों के लिए नीचे की ओर आकर्षित होकर क्रीड़ा करते हुए वायु एवं विद्युत् की धाराएँ प्रवाहित होती हैं और ये धाराएँ एक-दूसरे को मथती हुई ताप को बढ़ाती हुई जाती हैं। इससे पदार्थ में बाहुरूप बलों की वृद्धि होती है, जिससे पदार्थ का परस्पर संगमन कर्म समृद्ध होता है। (सौमापौष्णः, श्यामः, नाभ्याम्) {(श्यामः= श्यामं श्यायतेः (निरु. ४/३)। पूषा= अन्नं वै पूषा (कौ. १२/८), असौ वै पूषा योऽसौ (सूर्यः) तपति (कौ. ५/२)} तारे के निर्माण हेतु समुचित केन्द्र बनाने के लिए सोम तथा पूषा अर्थात् सबका पोषक प्राणतत्त्व दोनों मध्यभाग की ओर गतिशील होने लगते हैं। इसके साथ ही धनात्मक व ऋणात्मक कणों की धाराएँ उसी ओर बहने लगती हैं। इससे वे पदार्थ उस भाग में एकत्र होने लगते हैं। इसके साथ ही विभिन्न वायु रश्मियाँ (सोम) एवं संयोज्य कण भी उसी क्षेत्र में घनीभूत होने लगते हैं। (सौर्ययामौ, श्वेतः, च, कृष्णः, च, पाश्वयोः) {(पाश्वौ= द्यावापृथिवीनाम (निघं. ३/३०)} द्युलोक एवं पृथिवी लोक एवं ग्रहादि लोकों अर्थात् सूर्यलोक के पृथक्-पृथक् निर्माण एवं उनके पृथक्करण के लिए सूर्य एवं यम अर्थात् शुक्लवर्णीय विकिरण एवं कृष्णवर्णीय वायु तत्त्व उत्तरदायी होते हैं। (त्वाष्ट्रौ, लोमशसक्थौ, सक्थ्योः) {(सक्थिः= सचतेरासक्तोऽस्मिन् कायः (निरु.६/२०)। लोम = छन्दांसि वै लोमानि (श.६/४/१/६), लोम लुनातेर्वा लीयतेर्वा (निरु.३/५)} विशाल खगोलीय मेघ वा तारों के अन्दर जङ्घा रूप क्षेत्र, जो उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव तक फैला होता है और सम्पूर्ण लोक को थामे रखता है, के लिए उस सक्थि क्षेत्र में दो छन्द रश्मियाँ बार-बार स्पन्दित होती हैं, वे त्वष्टा अर्थात् इन्द्रदेवताक होती हैं। यहाँ 'लोमशसक्थौ' में 'सक्थि' के स्थान पर 'सक्थः' छान्दस प्रयोग है, जिसका द्विवचन 'सक्थौ' दिया है। (वायव्यः, श्वेतः, पुच्छे) {(पुच्छम् = यज्ञाऽयज्ञीयं पुच्छम् (तै.सं. ४/१/१०/५, मै.२/७/८)} आदित्यादि लोकों में संयोग एवं वियोग की क्रियाओं के लिए, विशेषकर असंयोज्य पदार्थों को संयोज्य बनाने के लिए श्वेतवर्णीय वायु अर्थात् गायत्री छन्द रश्मियों की विशेष अनिवार्यता होती है। इसका दूसरा आशय यह है कि संयोग-वियोग की प्रक्रिया विशुद्ध रूप से वायु तत्त्व में ही होती है, फिर चाहे वह वायु दिव्य ही क्यों न हो। (इन्द्रा य, स्वपस्याय, वेहत्, वैष्णवः, वामनः) {(वेहत् = विशेषेण हन्तीति वेहत् (उ.को. २/८६)। वामनः = वाम प्रशस्यनाम (निघं. ३/८१), ततो मत्वर्थे 'लोमापामादि अ. ५/२/१०० सूत्रेण नः (वैदिक कोष-आचार्य राजवीर शास्त्री)}

मैत्रायणी सं. ३/१३/२ में भी यही कथन है- 'इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्।' इससे स्पष्ट है कि वेहद् का इन्द्र से ही सम्बन्ध है, इससे अन्यथा नहीं, जैसा कि ऋषि दयानन्द के भाष्य में हिन्दी अनुवाद पण्डितों ने दर्शाया है, ऋषि दयानन्द के संस्कृत भाष्य में ठीक है।

यहाँ 'वैष्णवो वामनः' कहकर दर्शाया है कि जब विशाल खगोलीय मेघ तारे को जन्म दे देता है, तब वह विष्णु रूप हो जाता है। उस समय वह सब ओर से किरणों से घिरा हुआ तेजस्वी होता है। उस समय वह वामन अर्थात् प्रशस्त पदार्थों व कर्मों से युक्त होता है और उस प्रक्रिया में अथवा उस चरण तक पहुँचने के लिए उसे इन्द्ररूप भी प्रदान करता है। यह इन्द्ररूप ही वज्र रश्मियों द्वारा सभी बाधक असुरादि पदार्थों को नष्ट वा नियन्त्रित करता है। इसके साथ ही उस इन्द्ररूप को प्राप्त करने के लिए वह वृहत् रूप भी धारण करता है। इसका एक अर्थ है कि वह विशेष रूप से अनिष्ट पदार्थों को नष्ट करता है और इष्ट पदार्थों को प्राप्त करा कर वांछित गति प्राप्त करता है। इसका अर्थ यह है कि खगोलीय मेघ के तारे का रूप प्राप्त करने से पूर्व उसे अपने बाहरी आवरण को बाहर फेंक देना पड़ता है, जैसे कोई गौ अकाल ही अपने बच्चे को समय से पूर्व गर्भपतन द्वारा बाहर फेंक देती है। इसी प्रकार तारा स्वयं अपने सम्पूर्ण रूप को प्राप्त किए बिना बाहरी भाग को पृथक् कर देता है, जो ग्रह आदि का रूप ले लेता है।

भावार्थ- इस मन्त्र में तारों के निर्माण व स्वरूप का वर्णन है। सूर्यादि तारों के अन्दर विद्यमान रश्मियाँ न तो पदार्थ को अति सघन बनने देती हैं और न उसे अन्तरिक्ष में बिखरने ही देती हैं। इनके अन्दर विभिन्न आवेशित कण

अर्थात् आयन्स होते हैं, परन्तु ये मिलकर मोलिक्यूल्स का निर्माण भी नहीं करते। ऐसी रश्मियाँ तारों के बाहरी भाग में विशेषकर पायी जाती हैं। तारों के अन्दर यह प्रक्रिया उष्णिक् छन्द रश्मियों की प्रधानता वाले क्षेत्र में होती है। इस क्षेत्र में विभिन्न कणों में पारस्परिक संयोगादि क्रियाएँ समृद्ध होने लगती हैं और उच्च घोषों के साथ ऊँची-ऊँची ज्वालाओं से युक्त अग्नि उत्पन्न होता है। यह क्षेत्र भी तारों के बाहरी भाग में स्थित होता है। इस भाग में भारी विक्षोभयुक्त क्रियाएँ होती हैं। पदार्थ की तीव्र व अत्यन्त गर्म धाराएँ इधर से उधर दौड़ती रहती हैं। कुछ पदार्थ धाराओं के रूप में तारों के भीतरी भागों में प्रविष्ट होता रहता है और उनका ताप बढ़ता जाता है। जब तारों के केन्द्र का बनना प्रारम्भ होता है, उसके पूर्व धनायनों व ऋणायनों की धाराएँ अन्दर की ओर प्रविष्ट होने लगती हैं अथवा धनावेशित व ऋणावेशित मूलकणों की धाराएँ केन्द्रीय भाग की ओर जाती हैं, जिनके मेल से ऊर्जा उत्पन्न

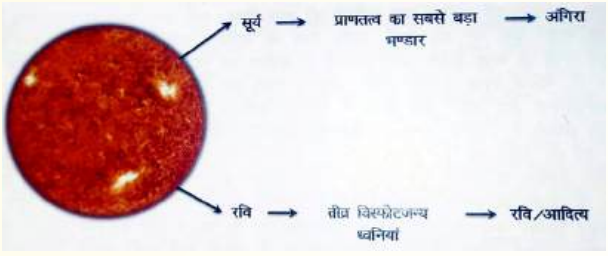

होती है तथा रिक्त स्थान भी उत्पन्न होने लगता है। इस स्थान को भरने के लिए पदार्थ तेजी से केन्द्र की ओर दौड़ता हुआ संघटित होने लगता है। खगोलीय मेघ के अन्दर तारों व ग्रहादि लोकों के निर्माण में गायत्री व बृहती छन्द रश्मियों की विशेष भूमिका होती है। तारों के उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाले क्षेत्र में विद्युत् चुम्बकीय क्षेत्रों की विशेष प्रबलता होती है। जब दो पदार्थ परस्पर क्रिया करते हैं, उस समय यह क्रिया वायु रश्मियों के मध्य ही होती है। जब कोई खगोलीय मेघ तारे को जन्म देता है, तब उससे पूर्व उसमें विस्फोट होता है और वह विशाल मेघ बाहरी भाग को तेजी से बाहर फेंक देता है। यहाँ बाहर फेंक हुआ पदार्थ ही ग्रहादि लोकों का रूप धारण कर लेता है और मध्य भाग धीरे-धीरे तारे के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस सम्पूर्ण घटना में डार्क ऊर्जा व डार्क मैटर की भी अनिवार्य भूमिका होती है। विस्फोट के लिए डार्क एनर्जी, जो उस मेघ के अन्दर भी होती है, उत्तरदायिनी होती है।

आधिभौतिक भाष्य (ऋषि दयानन्दकृत संस्कृत भाष्य पर मेरी हिन्दी व्याख्या)- (अश्वः, तूपरः, गोमृगः, ते, प्राजापत्याः) 'आशुगामी तुरङ्गाः, हिंसकः, गौरिव वर्तमानो गवयः, प्रजापतिः सूर्य्ये देवता येषान्ते, अश्व अर्थात् घोड़े के समान तीव्र वेगवान् पशु, तीव्रगामी हिंसक पशु एवं गाय के समान जो भी पशु ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं, उन सबका सूर्यादि लोकों से विशेष सम्बन्ध होता है। (कृष्णग्रीवः, आग्नेयः) 'कृष्णा ग्रीवा यस्य सः, अग्निदेवताकः' इस ब्रह्माण्ड में काली गर्दन वाले जो पशु वा पक्षी हैं, उनका सम्बन्ध अग्नि तत्त्व से विशेष होता है अर्थात् उनमें अग्नि तत्त्व की प्रधानता होती है। रराटे, पुरस्तात्, सारस्वती, मेषी) 'ललाटे, आदितः, सरस्वती देवता यस्यः सा, शब्द,कर्त्री मेषस्य स्त्री' जो प्राणी तीव्र आवाज वाले तथा विशेष वीर्यवान् होते हैं और जो चलते समय मस्तक को आगे की दिशा में करके चलते हैं, उनकी मादाएँ सरस्वती देवता वाली होती हैं। {(सरस्वती = सरः वाङ्नाम (निघं. १/११), उदकनाम (निरु. ९/२६)} इसका अर्थ यह है कि इन प्राणियों में वाक् एवं जल तत्त्व की प्रधानता होती है। (अधस्तात्, हन्वोः, आश्विनौ, अधोरामौ) 'मुखाऽवयवयोः, अश्विदेवताकौ, अधो रमणं ययोस्तौ' {(अश्विनौ = इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनाविमे हीदं सर्वम् (श. ४/१/५/१६)} जिनके दोनों जबड़े नीचे की ओर गति करने वाले हों, वे प्रकाश व विद्युत् अथवा वायु एवं विद्युत् की प्रधानता वाले होते हैं। इसके साथ ही 'अधस्तात्' पद यह भी संकेत देता है कि इन प्राणियों के जबड़े नीचे की ओर होते हैं किंवा जिनका निचला जबड़ा ही नीचे की ओर गति करता है। (बाह्वोः, सौमापौष्णः, श्यामः, नाभ्याम्) यहाँ 'बाह्वोः' पद छूटा है। 'सोमपूषादेवताकः, कृष्णवर्णः, मध्ये' जो प्राणी नाभि भाग में अथवा मध्य भाग में कृष्ण वर्ण वाले होते हैं, उनकी भुजाएँ सोम व पूषा देवता वाली होती हैं अर्थात् उनमें वायु एवं अग्नि तत्त्वों की प्रधानता होती है। (सौर्ययामौ, श्वेतश्च, कृष्णश्च, पार्श्वयोः)

सूर्ययमसम्बन्धिनौ, श्वेतवर्णः, यहाँ 'कृष्णः', 'च', 'च' पद छूटा हैं। वामदक्षिणभागयोः' जिन प्राणियों के दोनों पार्श्व काले व सफेद रंग के होते हैं। इनमें एक काला व दूसरा सफेद रंग का भी हो सकता है अथवा दोनों ही काले व श्वेत रंग के धब्बों से युक्त होते हैं, वे प्राणी सूर्य व वायु देवता वाले होते हैं अर्थात् उनमें तेज एवं बल की अधिकता होती है। (त्वाष्ट्रौ, लोमशसक्थौ, सक्थ्योः) 'त्वष्टृदेवताकौ, लोमानि विद्यन्ते यस्य तल्लोमशं सक्थि ययोस्तौ, पादावयवयोः' जिन प्राणियों की जंघाओं पर अधिक बाल होते हैं, वे त्वष्टा देवताक होते हैं। इसका अर्थ है कि वे तीक्ष्ण शक्ति सम्पन्न होते हैं। (वायव्यः, श्वेतः, पुच्छे) 'वायुदेवताकः श्वेतवर्णः पुच्छे' जिनके पूँछ पर श्वेत रंग के धब्बेश होते अथवा जिनकी पूँछ श्वेत रंग की होती है, वे वायु देवताक प्राणी वायु के समान बल एवं वेग वाले होते हैं। (वेहत्, वामनः, वैष्णवः) 'अकाले वृषभोपगमने गर्भघातिनी, वक्राङ्गाः, विष्णुदेवताकः। गर्भघातिनी मादा पशु व टेढ़े-मेढ़े अंगों वाले प्राणी विष्णु देवताक होते हैं अर्थात् इनमें विद्युत् की क्रियाशीलता अधिक होती है। (इन्द्राय, स्वपस्याय) 'ऐश्वर्ययुक्ताय, शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य तस्मै' हे मनुष्यो! इन सभी प्राणियों का ऐश्वर्ययुक्त सुन्दर कर्मों के लिए सर्वकल्याणार्थ उपयोग करो।

भावार्थ- ये मनुष्या अश्वादिभ्यः कार्य्याणि संसाध्यैश्वर्यमुन्नीय धर्म्योणि कर्माणि कुर्युस्ते सौभाग्यवन्तो भवेयुः। अत्र सर्वत्र देवतापदेन तत्तद्गुणयोगात्पशवो वेदितव्याः'। जो मनुष्य अश्वादि पशुओं से नाना प्रकार के कार्यों को सिद्ध कर ऐश्वर्य की उन्नति करके धर्मानुकूल काम करें, वे उत्तम भाग्य वाले होवें। इस प्रकरण में जो-जो देवता वाची पद आये हैं, उनसे यह जानना चाहिए कि उन-उन पशुओं में उस-उस पदार्थ के गुणों की प्रधानता है। इस कारण प्रत्येक जाति के प्राणियों के गुण-कर्म-स्वभाव भिन्न-भिन्न होते हैं। मनुष्यों को धर्मपूर्वक विभिन्न प्राणियों का यथासम्भव सदुपयोग करने का यत्न करना चाहिए। यहाँ किसी पशु-पक्षी विशेष का ज्ञान नहीं है, बल्कि विभिन्न प्राणियों की पहचान दी हुई हैं और उस-उस पहचान के भिन्न-भिन्न लोकों पर भिन्न-भिन्न प्राणी अथवा एक ही लोक पर अनेक प्राणी हो सकते हैं। मनुष्य का अर्थ भी मननशील प्राणी है, जो भिन्न-भिन्न लोकों में भिन्न-भिन्न रूप-रंग के हो सकते हैं और उनका जैविक स्वरूप भी भिन्न-भिन्न हो सकता है। इस मन्त्र में जो देवता पदों का उपयोग किया है, वह संसार के वैज्ञानिकों, जिनमें प्राणि-विज्ञान, जैवरसायन, भौतिक विज्ञान एवं शरीर क्रियाविज्ञान के उच्च कोटि के वैज्ञानिकों को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

आध्यात्मिक भाष्य- (अश्वः, तूपरः, गोमृगः, ते, प्राजापत्याः) {(अश्वः = यजमानो वा अश्वः (तै. ३/६/१७/५), महन्नाम (निघं. ३/३)। गोमृगः = यो गां मार्ष्टि शुन्धति सः (म.द.भा. २४/३०)} ब्रह्मयज्ञ के यजमान सभी अनिष्ट वृत्तियों को नष्ट करके अपनी इन्द्रियों को शुद्ध करके महत्ता को प्राप्त होते हैं। ऐसे महान् ब्रह्मयाजक प्रजापति परमात्मा के सानिध्य को प्राप्त करते हैं। (कृष्णग्रीवः, आग्नेयः) {(कृष्णः = तद्धि वारुणं यत् कृष्णम् (श. ५/२/५/१७), कृष्णमृक् (का.२३/३)। ग्रीवा = ग्रीवा गिरतेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा (नि.२/२८)} जो योगी स्वयं प्रकाशस्वरूप सबके नायक परमपिता परमात्मा के साक्षात्कृतधर्मा होते हैं, वे वरणीय ऋचाओं का पान करते हैं अर्थात् वे वेद की ऋचाओं में ही रमण करते व उन्हीं का उपदेश करते हैं। (रराटे, पुरस्तात्, सारस्वती, मेषी) ऐसे योगी सर्वप्रथम अपने मस्तिष्क वा मन में ज्ञान एवं आनन्द की वर्षा करने वाले सरस्वती अर्थात् वेदवाणी को धारण करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे उनकी बुद्धि वेदों के प्रति धारणावती होने लगती है। (अधस्तात्, हन्वोः, बाह्वोः, अधोरामौ, आश्विनौ) {(बाहू वै मित्रावरुणौ (श. ५/४/१/१)} तदनन्तर वह प्राण, अपान एवं उदान, जो हमारे शरीर में बाहुरूप बल के समान होते हैं तथा जिनके संयम से शारीरिक एवं मानसिक दोषों का हनन किया जा सकता है, का परस्पर एक-दूसरे में हवन करके अधः पतित होने वाले मन व बुद्धि को बलवान् बनाने का प्रयत्न करता है। (सौमापौष्णः, श्यामः, नाभ्याम्) {(श्यामः = श्याम इव पाप्मा (काठ. १३/६)} सकल सृष्टि के उत्पादक, प्रेरक व पोषक परब्रह्म की प्रेरणा से वह सभी पापों को बाँधने अर्थात् नियन्त्रित करने का प्रयत्न करता है। इसके

साथ ही वह नाभिचक्र में संयम करके शरीर के अन्दर होने वाली प्रेरक व पुष्टि क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करता है। (सौर्ययामौ, श्वेतः, च, कृष्णः, च, पाश्र्वयोः) {('श्वेतः' पद 'टुओश्वि गतिवृद्ध्योः' धातु से व्युत्पन्न है। पार्श्वषः = स्पर्शति येन स पाश्र्वः (उ.को. ५/२७)} सूर्य की किरणों एवं वायु रश्मियों को स्पर्श करता अर्थात् उनमें संयम करता हुआ योगी कृष्णरूप होकर अर्थात् उन किरणों व वायु रश्मियों को आकृष्ट करता हुआ उन पर गमन करने वाला हो जाता है। इसके साथ ही उसे महिमा की सिद्धि भी प्राप्त होती है अथवा उसके ऐश्वर्य में वृद्धि होती चली जाती है। (त्वाष्ट्र, लोमशसक्थौ, सक्थ्योः) {(सक्थिः = सजतीति सक्थिः (उ.को. ३/१५४)। त्वष्टा = त्वष्टां यजमानः (काठ. ७/१०), वाग्वै त्वष्टा (ऐ. २/४)} वह ज्ञान एवं आनन्द दोनों प्राप्त करने के लिए अर्थात् दोनों में निमग्नन रहने के लिए दोनों सक्थियों अर्थात् आत्मा से जुड़े हुए सूक्ष्म व स्थूल शरीर, जिनमें नाना प्रकार की छन्द रश्मियों भरी रहती हैं, उन्हें परस्पर संगत करता है। (वायव्यः, श्वेतः, पुच्छे) {पुच्छम् = यज्ञाऽयज्ञीयं पुच्छम् (तै.सं. ४/१/१०/५), मै. २/७/८)। {वह सूक्ष्म पदार्थों के संगमन एवं वियोजन के लिए वायु के श्वेत रूप में संयम करता है अर्थात् वह वायु तत्व में विद्यमान गायत्री छन्द रश्मियों में संयम करता है। (वेहत्, वामनः, वैष्णवः) {(वाम = प्रशस्यनाम (निघं. ३/८) ततो मत्वर्थे 'लोमादिपामादि.' (अष्टा. ५/२/१००) सूत्रेण नः (वैदिक कोष- आचार्य राजवीर शास्त्री)} सभी दोषों व वासनाओं को विशेष रूप से नष्ट करने वाला तथा श्रेष्ठा विचारों व संस्कारों से युक्त साधक विष्णु अर्थात् सर्वव्यापक परब्रह्मा को प्राप्त करने वाला होता है। (इन्द्राय, सु, अपस्याय) ऐसा योगी पुरुष संसार में परोपकारादि श्रेष्ठातम कर्मों को करने तथा सकलैश्वर्य की प्राप्ति के लिए ही जन्म लेता है।

भावार्थ- योगी जन प्रत्याहार प्राणायामादि तप करके अपने दोषों को दूर करते हैं, जिससे उनकी बुद्धि उत्तरोत्तर पवित्र एवं धारणावती होकर वेद की ऋचाओं के अनुपम विज्ञान का पान करने वाली होती है। वे वेद की ऋचाओं में ही रमण करते हैं तथा इनके द्वारा वे सृष्टि के पदार्थों को यथावत् जानने में समर्थ होते हैं। वह योगी योगबल के द्वारा नाभिचक्र में संयम करने से शरीर क्रिया विज्ञान को जानने वाला होता है। वह उदान वायु पर संयम करके आकाशगमन में समर्थ होता तथा महिमा-गरिमा आदि सिद्धियों को प्राप्त होता है। वह वायु तत्त्व में विद्यमान गायत्री छन्द रश्मियों में संयम करके योगबल से सूक्ष्म कणों के संगमन व वियोजन में समर्थ होकर नवीन-नवीन पदार्थों की रचना करने में भी समर्थ होता है। वह अपने सभी दोषों को दग्धबीज करके परम पद को प्राप्त कर लेता है।

लेखक- अचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्थान्यास, वेद विज्ञान मन्दिर,
भागल-भीम, भीनमाल

डॉ. नरेन्द्र आर्य बर्मिघम का निधन–गहन शोक

सार्वदेशिक सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान, इस न्यास के न्यासी बाबू आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा के अनुज डॉक्टर नरेन्द्र आर्य भारतवर्ष से दूर ब्रिटेन में रहकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सर्वतोभावेन संलग्न रहे। वे आर्य समाज बर्मिंघम के वर्षों प्रधान रहे। लेखन के क्षेत्र में भी उनके अवदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

ऐसे कर्मयोगी आर्यश्रेष्ठ के निधन के समाचार से हमें अत्यन्त कष्ट है। हमारा डॉक्टर नरेन्द्र से भारत वर्ष में ही कई बार मिलना हुआ। डॉ. नरेन्द्र आर्य महर्षि दयानन्द के प्रति और उनके सत्यार्थ प्रकाश के प्रति इतने समर्पित थे कि उनसे बात करना सदैव प्रेरणा प्रदान करता था। आज वह हमारे मध्य नहीं रहे, यह व्यक्तिगत रूप से हमारी और आर्य जगत् की महती क्षति है परन्तु इसको सहने के अलावा और कोई मार्ग भी तो नहीं है।

न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हम आदरणीय भाई आनन्द कुमार जी आर्य और उनके समस्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

आत्म निवेदन

बाल विवाह एक अभिशाप

बच्चों का विवाह किस अवस्था में हो अर्थात् विवाह के समय उनकी आयु क्या हो? यह विषय स्वास्थ्य यथा शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता आदि पर निर्भर करता है। संक्षेप में इनका नीचे परिगणन कर सकते हैं।

1. **शारीरिक और मानसिक परिपक्वता :** विवाह के लिए दोनों व्यक्तियों का शारीरिक और मानसिक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है।
2. **भावनात्मक परिपक्वता :** विवाह एक गम्भीर प्रतिबद्धता है, और इसके लिए दोनों व्यक्तियों का भावनात्मक रूप से स्थिर और परिपक्व होना आवश्यक है।
3. **आर्थिक स्थिरता :** विवाह के बाद परिवार का भरण-पोषण करने के लिए आर्थिक स्थिरता भी एक महत्वपूर्ण कारक है
4. **शिक्षा और आजीविका :** आवश्यक है कि दोनों व्यक्ति सबसे पहले अपनी शिक्षा पूर्ण करें। करियर को प्राथमिकता देना चाहते हैं, तो उसमें स्थापित हो आर्थिक रूप से निर्भर बनें।

इसीलिए देश काल परिस्थिति के अनुसार एक कानूनी उम्र भी तय की जाती है जो समुचित समझी जाती है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है आर्यसमाज के प्रयत्नों से १९३३ में विवाह योग्य कानूनी आयु निर्धारण का कानून बना जो 'शारदा एक्ट' कहलाता है। इसका अधिनियम का नामकरण प्रसिद्ध आर्यनेता दीवान हरविलास शारदा जी के नाम पर रखा गया। अभी भारत में, यह उम्र लड़कियों के लिए १८ वर्ष और लड़कों के लिए २१ वर्ष है। इसे बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है।

आर्यों में बाल-विवाह नहीं हुआ करते थे। यह ठीक है कि अनेक परिस्थितियों का निर्माण मध्यकाल में हुआ जिनके कारण हिन्दुओं में भी बाल-विवाह होने लगे और दुर्भाग्य यहाँ तक रहा कि इसके लिए शास्त्र वचन भी गढ़ लिए गए। यहाँ सुखदायी स्थिति यह है कि हिन्दुओं में सुधार करने के लिए समय समय पर अपने अन्दर से ही प्रयत्न होता रहा है और एकत्रित कूड़ेनुमा दुष्पराम्पराओं पर झाड़ू लगाई जाती रही है। अनेक महापुरुषों ने इस ओर कार्य किया पर महर्षि दयानन्द का कार्य अद्वितीय था। वे बाल-विवाह को समस्त बिगाड़ों का मूल मानते हैं। उनके विचार स्पष्ट करने हेतु हम उनके कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से कुछ उद्धहरण नीचे उद्धृत

कर रहे हैं।

'जो ब्रह्मचर्य्यधारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये विना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री-पुरुष नष्ट-भ्रष्ट होकर विद्वानों में अप्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं।'

'जब से यह ब्रह्मचर्य्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता-पिता के आधीन विवाह होने लगा, तब से क्रमशः आर्य्यावर्त्त देश की हानि ही होती चली आई है। इससे इस दुष्ट काम को छोड़ के, सज्जन लोग पूर्वोक्त प्रकार से स्वयंवर विवाह किया करें।'

'निश्चय करके ब्रह्मचर्य्य से विद्या, शिक्षा, शरीर और आत्मा के बल और युवावस्था को प्राप्त हो ही के, विवाह करूँ, इससे विरुद्ध करना, वेदविरुद्ध होने से, सुखदायक विवाह कभी नहीं होता।'

दुनिया जानती है कि आर्यसमाज ने इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कितना कार्य किया। परन्तु इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जिनके लिए किसी एक व्यक्ति का आदेश ही सब कुछ है, देश-काल-परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में भी नितान्त हानिकारक और हेय समझे जाने पर भी वह मत अपरिवर्तनीय है। यह प्रवृत्ति इस्लाम के मानने वालों में दिखती है। किसी समय में उनके आदर्श ने अत्यन्त अल्प आयु की लड़की से विवाह किया तो अब यह आयु उनके लिए आदर्श बन गयी। कब तक? जब तक दुनिया है तब तक। भारत में मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार लडके-लड़की दोनों के लिए विवाह की आयु जब वे puberty प्राप्त कर लें अथवा १५ वर्ष, जो भी पहले हो, नियत की गयी है। आज के युग में जब बच्चे २५ वर्ष से पूर्व शिक्षा एवं अर्थ उपार्जन की दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं हो पाते मुस्लिम भाई उक्त नियम में संशोधन नहीं चाहते। प्रश्न यह उठता है कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक रूप से अपरिपक्व एवं शिक्षा व अर्थोपार्जन की दृष्टि से भी अपूर्ण बच्चों के विवाह जारी रहने चाहिए? कदापि नहीं। होना तो यह चाहिए कि इस सुधार की माँग मुस्लिम समुदाय की ही ओर से आनी चाहिए, परन्तु इसके उलट सरकार की ऐसी किसी भी मंशा का उनके द्वारा घोर विरोध किया जाता है। तो इसका उपाय क्या है? प्रत्यक्ष रूप से मुस्लिम किशोरों के लिए विवाह की १५ वर्ष की आयु हानिकारक है। जब राजनीतिक इच्छा शक्ति विवाह-तलाक आदि जैसे विषयों पर समान कानून लाने में झिझक रही है, और कानून इसलिए बेबस रह जाता है कि मुस्लिम बच्चों के विषय में में मुस्लिम पर्सनल कानून उनकी सुरक्षा हेतु आ जाता है, तब इन किशोरों के हित के लिए किया क्या जाय? यहाँ यह सोच कर भी खामोश नहीं बैठा जा सकता कि जब उनके अपनों को ही उनकी चिन्ता नहीं है तो हमें क्या ? सबकी उन्नति का सोचना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। अतः धर्म, जाति, नस्ल के भेदभाव से ऊपर उठकर विवाह योग्य समान आयु के प्रत्येक प्रयत्न का स्वागत करना चाहिए। जहाँ तक हमारे न्यायालयों का प्रश्न है, विभिन्न उच्च

न्यायालयों ने इस विषय पर विभिन्न मत वाले निर्णय दिए हैं अतः आवश्यक था कि उच्चतम न्यायालय का निर्णय आवें ताकि वह सब पर लागू हो। अब माननीय उच्चतम न्यायालय का इस विषय पर स्वागत योग्य निर्णय आया है। इसी कारण यह आलेख लिख रहे हैं।

आज शिक्षा के प्रसार के साथ भारत में बाल विवाह कम भले ही हुए हैं पर अभी मंजिल बहुत दूर है।

२०१९-२०२१ के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-५०१ के अनुसार १८ साल से कम आयु की २३.३% और २१ साल से कम आयु के १७.७% लड़कों का बाल विवाह कराया जाता है।

२००१-२००६ के बीच बाल विवाह की दर ४७% थी जो बाल विवाह निषेध कानून के पश्चात् घटने लगी। २०१५-१६ में घटकर २७% रह गई और २०१९-२१ में २३.३% हो गई।

ऐसे समय में माननीय उच्चतम न्यायलय द्वारा यह निर्णीत करते हुए कि विवाह के लिए आयु के मामले में पर्सनल लॉ की बाधा स्वीकृत नहीं की जा सकती, बहुत सार्थक निर्णय दिया गया है। हम इसका सर्वथा स्वागत करते हैं।

बाल विवाह पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश और टिप्पणी

हाल में सुप्रीम कोर्ट में 'सोसाइटी फॉर एनलाइटनमेंट एंड वॉलेंटरी एक्शन' द्वारा २०१७ में लगाई गई याचिका पर निर्णय देते हुए CJI डीवाई चन्द्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने इस मामले पर १४१ पन्नों के फैसला दिया। माननीयों ने साफ कहा, 'बाल विवाह निषेध अधिनियम किसी भी पर्सनल लॉ की परम्परा से बाधित नहीं हो सकता। ये बच्चों की आजादी, उनकी पसन्द, उनके निर्णय लेने की क्षमता, बचपन में आनन्द लेने के अधिकार को प्रभावित करता है।'

माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस विषय को अत्यन्त गम्भीरता से लिया। उन्होंने बाल विवाह को रोकने हेतु निम्न निर्देश जारी किये।

बालविवाह रोकने के लिए राज्य और केन्द्र शासित क्षेत्र में जिला स्तर पर चाइल्ड मैरिज प्रिवेंशन ऑफिसर नियुक्त किए जाएँ।

* हर राज्य इस सम्बम्ध में ३ महीने में रिपोर्ट अपलोड करें।
* स्कूल, पंचायत, स्थानीय संस्थाओं में चाइल्डलाइन (१०९८) और महिला हेल्पलाइन (१८१) की जानकारी दी जाए। बच्चों को समझाया जाए कि कैसे मदद ली जाती है।
* स्कूलों, धार्मिक संस्थाओं और पंचायतों में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ। स्थानीय भाषा में प्रभावी होर्डिंग्स और स्लोगन बनाए जाएँ।
* 'बाल विवाह मुक्त गाँव की पहल हो। ऐसे गाँवों व ग्राम पंचायतों को 'बाल विवाह मुक्त' सर्टिफिकेट दिया जाए।
* राज्य बाल विवाह निषेध यूनिट बनाएँ। इसमें पाँच सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को रखा जाए, जिनमें २

महिलाएँ जरूर हों।

* मजिस्ट्रेट स्वतः संज्ञान लेकर निर्देश जारी कर सकेंगे। केन्द्र, राज्य सरकारों के साथ मिलकर ऐसे मामलों के लिए फास्ट-ट्रैक कोर्ट बनाएँ।
* कोई सरकारी कर्मचारी बाल विवाह में शामिल पाया गया तो उस पर कानूनी कार्रवाई की जाए।

आज जहाँ सरकार से लेकर न्याय व्यवस्था बाल विवाह जैसे मुद्दे पर चिन्तित है और विचार किया जा रहा है कि अभी जो लड़कियों के विवाह की उम्र १८ है उसे बढ़ाकर २१ कर देनी चाहिए। ऐसे देश में एक मजहब अपना पर्सनल लॉ चलाता है और देश के संविधान, उसमें लिखी बात, मानवाधिकार बचाने के लिए लागू कानून को मानने से इनकार कर देता है। क्या बाल विवाह से लड़ने के क्रम में देश में एक समान कानून लागू करने का काम नहीं होना चाहिए?

मालूम हो कि मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) आवेदन अधिनियम, १९३७ के तहत नाबालिगों (१८ साल से कम उम्र की लड़की) को निकाह की अनुमति दी गई है। कानून के अनुसार लड़की के यौवन (Puberty) में प्रवेश करते ही उसे वयस्क मान लिया जाता है और उसका निकाह जायज होता है। दूसरे स्पष्ट रूप से कहा जाय तो जैसे ही लड़की प्रथम बार रजस्वला होती है उसका यौवन प्रवेश (Puberty) हो जाता है। मुस्लिम कानून के अनुसार इसका निकाह किया जा सकता है। आप या कोई भी विवेकशील व्यक्ति विचारे कि क्या यह विवाह की उचित आयु है? पर्सनल लॉ के नाम पर लड़की पर यह अत्याचार कदापि नहीं किया जा सकता। अतः उच्चतम न्यायालय के निर्णय का समाज के हर वर्ग द्वारा स्वागत होना चाहिए और सरकार को ऐसे मामलों में सामान कानून संहिता अविलम्ब लागू करनी चाहिए।

ज्यादा पुराना नहीं, २०२२ का मामला है। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने एक नाबालिग मुस्लिम लड़की के निकाह को शरिया का हवाला देकर वैध माना था। इसके बाद झारखण्ड हाईकोर्ट ने भी एक मामले में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के तहत एक नाबालिग के निकाह को जायज बता दिया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने इस निर्णय के विरुद्ध निर्णय देकर इस बात पर अपनी मुहर लगा दी है कि बाल विवाह निषेध अधिनियम प्रत्येक भारतीय नागरिक पर लागू होगा।

बाल विवाह के दुष्परिणाम अनेक हैं और ये किसी धर्म-मजहब को देख अपना असर नहीं दिखाते। कम उम्र में निकाह या शादी से बच्चियों की शिक्षा रुकती है, उनका सामाजिक विकास बाधित होता है, उन्हें घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ता है और स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ आती हैं वो अलग। कम उम्र में माँ बन जाना किसी लड़की के लिए कितना हानिप्रद हो सकता है उसके लिए भुवन रिभु की पुस्तक When Children within children पढ़ें। बाल विवाह को बढ़ावा देने वाले वस्तुतः अपने बच्चों की उन्नति की सारी सम्भावनाएँ समाप्त कर देते हैं। ये नहीं सोचते कि बढ़ती दुनिया को देख आगे चलकर उनके बच्चे कितना पिछड़ा महसूस करेंगे। अगर सिर्फ ये तर्क देकर इसे जायज ठहराया जाएगा कि किसी पर्सनल लॉ के कारण ये उचित है तो ये जिद्द केवल और केवल समाज के भावी युवाओं से उनके अधिकार छीनने का काम करेगी और बाल अवस्था में ही उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर कर देगी, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

सुप्रीमकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड़ की पीठ की यह टिप्पणी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि 'बाल विवाह जीवनसाथी चुनने के अधिकार का उल्लंघन है। इससे उसकी 'स्वतंत्र पसन्द' और 'बचपन' दोनों का उल्लंघन होता है।' हाल ही में पीठ ने संसद से बाल विवाह निषेध अधिनियम (PCMA), २००६ में संशोधन करके बाल विवाह पर पूरी तरह से पाबन्दी लगाने पर विचार करने को कहा है। अर्थात् किसी समुदाय को कोई उन्मुक्ति नहीं।

CJI चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन जजों की पीठ ने यह भी कहा-महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव का उन्मूलन (CEDAW) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय कानून नाबालिगों के विवाह के खिलाफ प्रावधान करते हैं। बच्चे की तय की गई शादियाँ उनके स्वतंत्र विकल्प, स्वायत्तता और बचपन के अधिकारों का उल्लंघन करती हैं। बाल विवाह निषेध अधिनियम को किसी भी व्यक्तिगत कानून के तहत परम्पराओं से बाधित नहीं किया जा सकता है और कहा कि बच्चों से सम्बन्धित विवाह जीवन साथी चुनने की स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन है। { पाठकों को हम स्मरण करा दें कि युवक- युवतियों के इस अधिकार के सबसे बड़ें वकील महर्षि दयानन्द थे।} पीठ में जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा भी शामिल थे। सुप्रीम कोर्ट के वकील अनिल सिंह श्रीनेत कहते हैं कि यह सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी कॉमन सिविल कोड की दिशा में एक और बड़ा कदम है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

बैंक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

[कुछ याद उन्हें भी कर लो]

भगत सिंह और उनके विचार

बहुत से लोग प्रायः यह सोचते हैं कि देश के स्वातंत्र्य संग्राम में जिन क्रान्तिवीरों ने भाग लिया वे अत्यन्त भावुक थे और देश से प्यार करते थे, इस नाते उन्होंने अपने प्राण देश पर न्योछावर कर दिए। परन्तु बात केवल इतनी सी नहीं है। वे लोग स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् समाज व्यवस्था कैसी हो, राज्य व्यवस्था कैसी हो इस पर भी अपने क्रान्तिकारी विचार रखते थे। क्रान्तिकारी संगठन का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक संघ' रखना ही इस चिन्तन का द्योतक है। पुरानी कुरीतियों, जिन्होंने भारतीय समाज को खोखला कर दिया था उनको भी यह लोग उखाड़ना चाहते थे। अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भेद की जिस समस्या से भारतवर्ष जूझ रहा था, उससे मुक्ति का प्रण भी उनके मन में था और यह केवल राजनीतिक किताबी बातें नहीं थी उनके मन में ऐसे समाज की स्थापना करके उसका एक अंग बनकर गौरव की अनुभूति करने का भाव था।

शहीद-ए-आ़जम भगत सिंह के जीवन को जब हम देखते हैं तो स्पष्ट रूप से ये बात हमारे सामने आती है। भगत सिंह जिस समय जेल में थे, उनकी कोठरी में सफाई, मलमूत्र उठाने इत्यादि का कार्य बोघा नाम का व्यक्ति करता था। भगत सिंह उसे 'बेबे' कहकर बुलाते थे। उनसे जब यह पूछा जाता था कि आप इनको बेबे क्यों कहते हैं तो वह उत्तर देते थे कि मेरा मलमूत्र या तो मेरी माँ ने उठाया है या इस भले आदमी ने उठाया है तो यह मेरी बेबे ही तो हुआ। भगत सिंह बोघा से अनेक बार कहते थे कि बेबे तू मुझे एक बार रोटी बना करके तो खिला दे, परन्तु वह कहता था ओये सरदारा! मैं तो नीची जात का आदमी हूँ तू ऊँची जात का सरदार है मैं तेरे को कैसे खिला सकता हूँ? यह कहकर वह हमेशा भगत सिंह के आग्रह को टाल देता था। पर जब फांसी में कुछ दिन ही बचे तो एक दिन भगत सिंह बोले- बेबे! अब तो हम कितने दिन के मेहमान हैं? अपनी अनन्त यात्रा पर हमको निकल जाना है, अब तो तू खाना खिला दे। यह सुनकर वह फूट-फूट कर रोया और उसने अपने हाथ से भगत सिंह को खाना बना करके खिलाया। तो इस प्रकार का समाज जिसमें कोई ऊँच नीच ना हो, अस्पृश्यता का लेशमात्र भाव न हो, वह बनाना चाहते थे।

आज अगर हम शहीद दिवस के अवसर पर भगत सिंह को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो उनकी इस बात को याद रखें कि समाज में कोई ऊँचा-नीचा नहीं है, सब बराबर है। छुआछूत और जातिवाद को जड़ से मिटा देना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। जो ऐसा नहीं करता है वह सच्चे मायनों में भगत सिंह को श्रद्धांजलि देने का अधिकारी नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भगत सिंह में अस्पृश्यता के विरोध की भावना पैतृक संस्कार के रूप में आयी थी।

सभी जानते हैं कि भगत के दादा आर्यसमाजी थे। और आर्यसमाज के अस्पृश्यता उन्मूलन के कार्यक्रम विशेषरूप में अछूतों के साथ सहभोज के कार्यक्रम प्रसिद्ध ही है।

श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

अच्छे स्वभाव और सेवाभाव से सम्भव है सबको अपना बना लेना

गुड़ जितना मीठा होता है उससे भी मीठी होती हैं गुड़ जैसी बातें। इसीलिए लोक जीवन में ही नहीं साहित्य में भी गुड़ को बहुत महत्त्व दिया गया है। पंजाबी में एक अखाण अथवा लोकोक्ति है- 'जे गुड़ खवाए मरे तां विहु देण दी की लोड़ है।' अर्थात् यदि गुड़ खिलाने से ही कोई मर जाए तो उसे विष देकर मारने की क्या जरूरत है? यह एक अत्यनत महत्त्वपूर्ण लोकोक्ति है जिसमें अपने व्यवहार को बदलकर सुन्दर ढंग से जीवन व्यतीत करने का निरूपण किया गया है। कहावतें अथवा लोकोक्तियाँ समाज के दीर्घकालीन अनुभव का निचोड़ होती हैं। इनमें समाज व लोगों के व्यवहार का मनोविज्ञान छिपा रहता है जिससे समाज को समझने में आसानी होती है। ये समाज की वास्तविकता का निरूपण करके समाज को न केवल गलत बातों के प्रति सतर्क करती हैं अपितु समाज का उचित मार्गदर्शन भी इनसे होता है। कई बार दिखने में ये अत्यन्त सामान्य लगती हैं लेकिन इनमें गम्भीर अर्थ छुपा रहता है। ऊपर से एक अत्यन्त सामान्य-सी लगने वाली ये कहावत भी अपने अन्दर बहुत गहरे अर्थ छुपाए हुए है। ऊपर से तो यही लगता है कि कहा गया है कि किसी को मारने के लिए जहर देने की बजाय गुड़ से काम चला लिया जाए लेकिन वास्तव में गुड़ खिलाने या खाने से कोई नहीं मरता।

हम किसी को मारना चाहते हैं तो उसे गुड़ खिला दें और वो मर जाए ये सम्भव ही नहीं। गुड़ खाने से मरना तो दूर व्यक्ति और अधिक स्वस्थ हो जाएगा क्योंकि गुड़ एक अत्यन्त पौष्टिक पदार्थ है। गुड़ को तो देश के कई भागों में मिठाई कहते हैं। जिस प्रकार शहरों व कस्बों में मेहमानों को मिठाई खिलाने और रिश्तेदारों को मिठाई भिजवाने का प्रचलन है उसी प्रकार से गाँवों में आज भी मेहमानों को गुड़ खिलाने व रिश्तेदारों को गुड़ भिजवाने का प्रचलन है। इस कहावत में गुड़ और जहर मात्र प्रतीक हैं। कोई भी काम सकारात्मक तरीके से हो जाए तो उसके लिए किसी भी तरह से नकारात्मक तरीके अपनाने की आवश्यकता नहीं। प्रेम से कोई समस्या हल हो जाए तो उसके लिए कठोर निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं। वास्तव में यहाँ नकारात्मक साधनों के प्रयोग की बजाय सकारात्मक साधनों के प्रयोग पर बल दिया गया है। कहा गया है कि जब सही तरीके से काम हो सकता है तो जीवन में गलत तरीके अपनाने की जरूरत ही नहीं।

गुड़ मीठा होता है लेकिन जहर को प्रायः कड़वा माना जाता है। जहर कड़वा न भी हो तो मधुर अथवा स्वादिष्ट तो नहीं होता। यहाँ किसी को गुड़ देकर मारने से तात्पर्य है अपने मधुर व्यवहार द्वारा किसी के मन को जीत लेना अथवा उसे अपने वश में कर लेना। यदि हम कटुवचन रूपी विषवमन द्वारा किसी को बदलना चाहें भी तो ये असम्भव है। शारीरिक बल रूपी विष भी किसी को कुछ समय के लिए दबा सकता है अथवा भयभीत कर सकता है लेकिन किसी को अपना नहीं बना सकता। एक कहावत ये भी है कि गुड़ न दे सके तो गुड़ जैसी बात तो की ही जा

सकती है। हमारे घर-परिवारों में अधिकांश समस्याओं का कारण इसी मिठास का अभाव होता

है। जिद्दी से जिद्दी बच्चों को इस मिठास से वश में करके उन्हें उद्दण्ड होने से बचाया जा सकता है। यही मिठास समस्त परिवार को ही नहीं पूरे समाज को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम है।

पिछले दिनों सोशल मीडिया में तैरते हुए एक सन्देश मुझ तक भी पहुँचा। लिखा था कुछ लोग इज्जत देने के नहीं जहर देने के काबिल होते हैं। कितनी पीड़ा, कितना आक्रोश, कितनी असहिष्णुता व कितनी नफ़रत भरी हुई है इस छोटे से सन्देश में। पूरी तरह से एक नकारात्मक मन की प्रतिध्वनि। प्रश्न उठता कि क्या कोई भी व्यक्ति जो इज्जत देने के काबिल न हो उसे केवल जहर ही दिया जा सकता है? क्या जहर देना ठीक है? क्या यह सम्भव है? क्या एक मात्र यही उपाय शेष है? बहुत सारे प्रश्नों के बीच बहुत पहले कई बार पढ़ी हुई एक चीनी लोककथा याद आ गई। एक लड़की शादी के बाद अपनी ससुराल पहुँची। उसकी सास बहुत ही सख़्त स्वभाव वाली एक बेहद खराब औरत थी जिसके कारण उसका जीना मुश्किल हो गया। लड़की अपनी सास से बहुत दुःखी रहने लगी। वह किसी भी कीमत पर उससे छुटकारा पाने के उपाय सोचती रहती। एक बार जब वो अपने मायके आई तो उसने अपने घरवालों व पड़ोसियों को अपनी सास के बारे में बताया।

उसके पड़ोस में रहने वाले एक समझदार व्यक्ति ने जब उसकी सास की दुष्टता के बारे में सुना तो उसने कहा कि वो उसे उसकी सास से छुटकारा दिला सकता है। कैसे? लड़की के ये पूछने पर उस व्यक्ति ने उसे एक डिब्बे में चूर्ण जैसी कोई चीज़ देते हुए कहा कि इसमें एक धीमा ज़हर है। इसमें से रोज़ थोड़ा-थोड़ा अपनी सास के खाने में मिला देना। वो कुछ ही महीनों में मर जाएगी और तुझे उससे छुटकारा मिल जाएगा। तुम्हारी सास व अन्य लोगों को तुझ पर शक न हो इसलिए इस दौरान अपनी सास की खूब इज्जत करना और उसका कहना मानना। उसे रोज अच्छा-अच्छा खाना बनाकर खिलाना। लड़की खुशी-खुशी ये सब करने को तैयार हो गई। लड़की जब पुनः अपनी ससुराल पहुँची तो उसने वैसा ही किया जैसा उसके पड़ोस में रहने वाले समझदार व्यक्ति ने कहा था।

वह अपनी सास की खूब इज्जत करती और अच्छे से अच्छा खाना बनाकर व उसमें पड़ोसी का दिया हुआ

जहर डालकर प्रेमपूर्वक अपनी सास को खिलाने का नाटक करती। लेकिन पुत्रवधू की इस काल्पनिक सेवा और सम्मान ने सास का मन बदल दिया। उसका दिल जीत लिया। वह मन ही मन कहती कि कितनी अच्छी लड़की है मेरी पुत्रवधू! और वह अपनी पुत्रवधू से सचमुच प्यार करने लगी। उसके प्रति उसका व्यवहार पूरी तरह से बदल गया। वह उस पर

अपने स्नेह की वर्षा करने लगी। अपनी सास के इस अद्वितीय स्नेहपूर्ण व्यवहार व प्यार के कारण लड़की भी अपनी सास की और अधिक सेवा व सम्मान करने लगी। दोनों को ही एक दूसरे से बेहद प्रेम हो गया और वह इतना अधिक बढ़ गया कि वे एक दूसरे के बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। लड़की ये सोचकर कि जहर के प्रभाव से उसकी सास कुछ ही दिनों में मर जाएगी दुखी रहने लगी। अब वह किसी भी तरह से अपनी सास को खोना नहीं चाहती थी।

लड़की पुनः एक दिन अपने मायके गई और पड़ोस में रहने वाले उसी समझदार व्यक्ति से मिलने जा पहुँची जिसने उसको उसकी सास से छुटकारा दिलाने का उपाय बतलाया था। उसने कहा, 'अब मैं अपनी सास को प्यार करने लगी हूँ। मैं उसके बिना नहीं रह सकती। आप किसी भी तरह से मेरी सास को बचा लीजिए।' पड़ोसी ने कहा कि तुम्हारी सास को कुछ नहीं होगा क्योंकि मैंने जो चीज दी थी वो जहर नहीं स्वास्थ्यवर्धक औषधि थी। जहर तो तुम्हारे मन में था जो सास के प्रति तुम्हारे अच्छे व्यवहार और सेवाभावना के कारण प्यार में बदल चुका है।' ये सुनकर लड़की की जान में जान आई। तो ऐसा होता है सम्मान और देखभाल का प्रभाव। जहर देकर हम लोगों से छुटकारा नहीं पा सकते लेकिन किसी का दिल जीतकर उसे सदा के लिए अपना बना सकते हैं। उसे इतना करीब ला सकते हैं कि उससे दूर होने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

पर क्या यह इतना सरल है? हाँ! यह अत्यन्त सरल है लेकिन हम करना नहीं चाहते। हम स्वयं झुकने की बजाय चाहते हैं कि सारा जमाना हमारे कदमों पर आकर झुके। कोई हमसे प्रेम करे तो ही हम उसका उत्तर दें। हम कोई पहल क्यों करें? हम ईंट का जवाब पत्थर से देने के अभ्यस्त हैं। और इसके लिए परिणामों की भी परवाह नहीं करते। यदि हम जहर देकर किसी को समाप्त करने का प्रयास करते हैं तो इसके क्या परिणाम होंगे? किसी को भी जहर देकर अथवा अन्य किसी भी तरीक़े से यदि हम उससे छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं तो इस कृत्य के लिए सबसे पहले हम स्वयं अपनी नज़रों में गिर जाएँगे और जीवनभर अपराधबोध से तड़पते रहेंगे। किसी का जीवन लेने मात्र से हमारी सारी समस्याओं का समाधान होना भी असम्भव है। इस संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें हम बिलकुल पसन्द नहीं करते और अनेकानेक लोग ऐसे हैं जो हमें पसन्द नहीं करते। यदि परस्पर एक दूसरे को जहर देकर मारने में ही हम इस समस्या का हल तलाश करें तो जहर देने का ये सिलसिला कभी नहीं रुक पाएगा इसमें सन्देह नहीं।

बहुत से लोग हमें दुख पहुँचाते रहते हैं। ऐसे में हम पूरी तरह से सुखी होने के लिए आखिर कितने लोगों को जहर दे सकते हैं? और फिर जहर देना क्या इतना सरल है कि जब चाहा जिसे जहर देकर मार डाला? क्या जहर की व्यवस्था करना निरापद अथवा सरल है? जब हम किसी को जहर देने के लिए जहर खोजने जाएँगे तो भी बड़ी सावधानी से चोरों की तरह जाएँगे और सौ झूठ-सच बोलकर मुश्किल से कहीं से जहर ला पाएँगे। किसी को जहर देकर मारने का इरादा करने, जहर लाने, उसे सँभालकर रखने और किसी को जहर देकर मार डालने की इस प्रक्रिया में ही हम स्वयं न जाने कितनी बार मरेंगे? जहर किसी को देना हो या उसे लाना हो वो हमेशा जहर ही रहेगा। जहर हमेशा अनिष्ट ही करेगा। जैसे फूलों की कल्पना हमें जीवन के आनन्द से भर देती है उसी प्रकार से जहर की कल्पना हमें मृत्यु के हाहाकार व निराशा से भर देती है।

हम जब भी किसी को जहर देने का इरादा करते हैं तो सबसे पहले स्वयं अपने अनिष्ट अथवा विनाश की भूमिका लिखते हैं। यदि हम किसी को मारने के लिए जहर की व्यवस्था करते हैं तो उसे अपने पास सँभालकर रखते हैं। यदि उसका उपयोग (दुरुपयोग) नहीं कर पाते तो हम उसे अपने पास रखने को अभिशप्त होते हैं। कई बार ऐसा देखने-सुनने में

आया है कि किसी अन्य के लिए लाया गया जहर हमारे ही गले उतर जाता है। कई बार गलती से बच्चे उस जहर को चख लेते हैं और अनर्थ हो जाता है। ये तो हुई जहर की बात लेकिन यदि हमें किसी को जहर देने की बजाय उसे फूल देने हों तो? यदि हम किसी को उपहार में देने के लिए फूलों का गुलदस्ता लेने

जाएँगे तो हमें चोरी-चोरी जाने की जरूरत नहीं। जब फूल खरीदने जाएँगे तो वहाँ रखे विभिन्न प्रकार के फूलों को देखकर प्रसन्नता ही होगी। गंध भी हमारा स्वागत करेगी।

जहाँ तक जहर की बात है चाहे वो भौतिक रूप में हो अथवा मानसिक रूप में यदि उसे कोई अन्य स्वीकार नहीं करता तो वो हमारे पास ही बना रहता है और जीवनभर हमें मारता रहता है। इसके विपरीत यदि हम किसी को फूल भेंट करते हैं तो अस्वीकृति का प्रश्न ही नहीं उठता और यदि कोई उन्हें अस्वीकार कर भी देता है तो वे फूल हमारे पास रहेंगे और जब तक हमारे पास रहेंगे हमें प्रसन्नता ही प्रदान करते रहेंगे। जब हम किसी के लिए कोई उपयोगी अथवा सार्थक उपहार खरीदते हैं तो उपहार पाने वाले की खुशी बढ़ जाती है और उस उपहार के स्वीकार न करने पर वह हमारे काम भी आ सकता है लेकिन एक अनुपयोगी व निरर्थक उपहार न तो किसी के काम ही आ सकता है और न किसी को प्रसन्नता ही प्रदान कर सकता है। जहर, चाहे वो भौतिक रूप में हो या फिर मानसिक अवस्था में, एक अनुपयोगी ही नहीं सबके लिए घातक उपहार है।

जहर देकर मारना भी कत्ल अथवा हत्या का ही एक रूप है। यदि हम किसी को जहर देकर मारते हैं तो हमारे बचने की सम्भावना भी बिलकुल नहीं रहती। आज तक कोई हत्यारा कानून के शिकंजे से नहीं बच पाया है तो हम कैसे बच पाएँगे? दूसरों को जहर देकर मारने का प्रयास करने वाले लोग अपने अन्त समय में स्वयं जहर की कामना करते देखे गए हैं लेकिन उन्हें वो भी मयस्सर नहीं हो पाता। अपने विरोधियों अथवा परेशान करनेवाले लोगों को जहर देकर अथवा अन्य किसी भी प्रकार से मारने का प्रयास तो दूर सोचना भी उचित नहीं। इसलिए किसी को भी जहर देकर मारने की बजाय उसे सद्भावना व प्रेम की मदिरा पिलाकर उसकी और स्वयं की नफरत का ही गला घोंट दिया जाए तो अधिक श्रेयस्कर होगा। मानव जीवन की श्रेष्ठता तो इसी में है कि वो दूसरों को जहर पिलाने की बजाय शिव की तरह सम्पूर्ण संसार को बचाने के लिए स्वयं उसे अपने कण्ठ में धारण कर नीलकण्ठ बन जाए।

किसी को जहर देकर मारना पापकर्म व अपराध है जिसका बुरा परिणाम निश्चित है। मुहावरे में बुरे परिणाम से बचने के लिए गुड़ खिलाकर मारने की नहीं अपितु जहर से हर हाल में बचने की बात कही गई है। यहाँ मृत्यु नहीं जीवन की बात की गई है। गुड़ जैसी मीठी बातों से काम निकालने की बात की गई है ताकि जहर जैसी कड़वी बात कहने की नौबत ही न आए। यदि हम चाहते हैं कि पारस्परिक राग-द्वेष, ईर्ष्या अथवा शत्रुता समाप्त हो जाए तो उसका एक ही उपाय है और वो उपाय है जहर देने की बजाय गुड़ देना। किसी को समाप्त करने के विचार से मुक्त होकर उसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाना। यदि हम सकारात्मक विचारों के साथ किसी की तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाते हैं तो उसमें अपेक्षा से अधिक सफलता की प्रबल सम्भावना रहती है। सकारात्मक भावों से उत्पन्न मधुर व्यवहार रूपी शर्करा किसी भी प्रकार के मनोमालिन्य से मुक्त कर सम्बन्धों को सुधारने में पूर्णतः सक्षम होती है। किसी को जहर देकर मारने की बजाय उसे गुड़ खिलाकर अथवा गुड़ जैसी बातें करके उसके मन को जीत लेना अधिक श्रेयस्कर है।

ए.डी. १०६ सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - ११००३४

वैदिक धर्म

प्राचीन काल में एक महान् ऋषि कणाद नामक हुए उन्होंने बनाया वैशेषिक दर्शन। बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है। उसमें उन्होंने धर्म की परिभाषा करते हुए लिखा है-

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

अर्थात् जिससे इस लोक और परलोक दोनों में सुख मिले, इसे धर्म कहते हैं। इससे प्रतीत होता है कि वे समस्त शुभ कर्म, जिनसे वास्तविक सुख मिलता है, धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत हैं। वास्तविक सुख का तात्पर्य है, उस सुखसे, जो क्षणिक इन्द्रिय-वासनाओं का उद्दीपक न हो। दूसरे की वस्तु चुरा लेने से अथवा मिथ्या बोलकर किसी को धोखा देकर भी कुछ काल के लिये मनुष्य को सुख होता है किन्तु वह सुख वास्तविक नहीं होता। वह तो उस **'पयोमुख विषकुम्भ'** के समान है जो ऊपर से अच्छा एवं स्वादिष्ट मालूम होता है किन्तु वस्तुतः प्राणनाश करता है। इसीलिये विद्वानों ने उक्त परिभाषा का अनेक व्याख्याओं द्वारा स्पष्ट अर्थ कर दिया है। श्रीमनु महाराज ने तो इस प्रकार के कर्मों का वर्गीकरण तक कर दिया है। उन्होंने लिखा है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म-लक्षणम्॥

अर्थात् कठिनाइयोंमें न घबराना, अन्यों के अपराधों पर ध्यान न देना, विषय वासनाओं में न फँसना, दूसरों की वस्तुओं को अनुचित रूप से लेने की इच्छा न करना, मन और शरीर दोनों को शुद्ध एवं स्वच्छ रखना, इन्द्रियों को दुष्कर्मों से रोकना, विचारशील तथा विद्वान् होना, जिस बात को जैसे जानता हो वैसे ही कह देना, क्रोध न करना, ये दश धर्म के लक्षण हैं। यदि मनुष्य इन पर आचरण करने का अभ्यास करे, तो वह इस जीवन में तथा इसके अनन्तर भी सानन्द रह सकता है। इसीलिये कहा है- **'दश लक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः'** अर्थात् इन दस लक्षण वाले धर्म का यत्न पूर्वक सेवन करना चाहिये। क्योंकि-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।

अर्थात् यदि हम धर्म को सुरक्षित रखेंगे तो यह भी हमारी रक्षा करेगा और यदि हम उसका नाश होने देंगे या करेंगे तो वह भी हमारा नाश करेगा। इस लौकिक तथा पारलौकिक सुख देने वाले धर्म की व्याख्या द्वारा तद्विषयक शिक्षा को ही धर्मशिक्षा कहते हैं। प्राचीन काल में प्रथम तो बालक माता-पिता का सदाचरण देख कर स्वयं ही शिष्ट एवं सदाचारी बन जाते थे, और यदि कोई त्रुटि भी रह गयी तो वह गुरु के उपदेशों से दूर हो जाती थी। धर्म का उपदेश शिक्षा का मुख्य अंग था, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य ही चरित्र-निर्माण माना जाता था। किन्तु शताब्दियों से उस सभ्यता का ह्रास होते-होते आज भारतीय समाज चारित्रिक दृष्टि से बहुत पतनोन्मुख हो गया है। मुगलकाल में प्राचीन भारतीय धर्म-सिद्धान्त का विरोध हुआ किन्तु उसने उसके अनुयायियों की श्रद्धा

और भी जागृत कर दी। नवीन शिक्षा प्रणाली ने हमारे मस्तिष्क में ऐसे भाव भर दिये जिनसे हम इस ओर ध्यान ही नहीं देते। प्रायः विद्यार्थी जीवन भर अन्यों की दासता कर येन-केन-प्रकारेण उदरपूर्ति करना ही पढ़ने का उद्देश्य समझने लगे हैं। अपने चारों ओर का दूषित वायुमण्डल देखकर उनमें भी बड़े पद पाने, व प्रासादों में निवास करने और विविध सांसारिक भोगविलास का आनन्द लूटने की तीव्र लालसा उत्पन्न हो जाती है। वे, जिस प्रकार हो सकता है, उस वासना की पूर्ति के लिये उद्योग करते हैं और जब उसमें कृतकार्य नहीं होते तो निकृष्ट मार्ग का अबलम्बन कर मानव समाज को कलंकित करने पर भी उद्यत हो जाते हैं। इसमें उनका अधिक दोष नहीं। अपने जीवन के सर्वोत्तम भाग- अध्ययन काल, में कभी उन्होंने शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सीखा ही नहीं। संयम एवं आत्मत्याग जैसे उच्च आदर्श उन्होंने नहीं सीखे। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन विज्ञान के विकास के साथ-साथ मानवता का विकास तो दूर रहा, उसका पतन होता चला जा रहा है। प्राचीन काल में केवल कुछ पुस्तकों को रट लेना ही शिक्षा का अन्त न समझा जाता था। गुरु जो कुछ उपदेश देते

थे, शिष्य श्रद्धा के साथ उन्हें हृदयंगम कर तदनुकूल आचरण करने की पूर्ण चेष्टा करते थे। आज भी यदि छात्र धर्म-शिक्षा का मूल्य समझने लगें और अपने मस्तिष्क विकास के साथ-साथ आत्मिक विकास पर भी ध्यान दें तो जीवन बहुत कुछ सुधर जाय।

जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिये भोजन आवश्यक है उसी प्रकार मन और आत्मा के लिये भी आहार की आवश्यकता होती है। इसकी पूर्ति धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन, महापुरुषों के सत्संग और सदाचरण से हो सकती है। धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से न केवल मस्तिष्क का विकास होता है, बल्कि आत्मा को भी शान्ति मिलती है। कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान हो जाता है। अनेक प्रलोभनों से रक्षा करने की सामर्थ्य उत्पन्न होती है। अधिक क्या कहा जाय, बिना धार्मिक शिक्षा के मनुष्य यह भी नहीं जान सकता कि वह कौन है? यहाँ किस हेतु आया है? और कहाँ जायगा? इत्यादि।

धर्म का जीवन के प्रत्येक क्षण पर नियन्त्रण रहता है। छोटे-छोटे कर्म के साथ धर्म का कुछ न कुछ सम्बन्ध लगा रहता है। अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित हो जाती हैं जब सामने अँधेरा प्रतीत होने लगता है। यह पता नहीं चलता कि कौन मार्ग अभीष्ट स्थान पर ले जायेगा। उस समय धर्म ही अपने उज्ज्वल प्रकाश से उस स्थान पर पहुँचाने में सहायक होता है। अतः धर्मशिक्षा का पाठ्य विषयों में अत्यन्त महत्व पूर्ण स्थान है ।

इस समय संसार में अनेक मत प्रचलित हैं। उनमें कुछ प्राचीन हैं और कुछ नवीन। बहुत से मत कुछ काल तक प्रचलित रहकर विलुप्त भी हो चुके हैं। आज उनका कोई अनुयायी नहीं। सब मतानुयायी अपने मत को मत न कह कर प्रायः धर्म कहा करते हैं। जैसे ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म आदि। इससे श्रोताओं के चित्त में एक दुविधा मी उत्पन्न हो जाती है कि वास्तविक सच्चा धर्म कौनसा है? बहुत से श्रद्धालु दीर्घकाल तक इसी उलझन में पड़े रहते हैं। किन्तु यदि थोड़ा विचार करके देखा जाय तो धर्म कभी मिथ्या हो ही नहीं सकता। यदि सत्य भाषण धर्म है तो वह धर्म ही रहेगा। देश-काल और परिस्थिति के अनुसार धर्म में परिवर्तन नहीं हुआ करता। ऐसे धर्मों की संख्या भी अधिक नहीं हो सकती। वह सारी सृष्टि के लिये एक समान रहेगा। अग्नि का धर्म उष्णता है तो अग्नि उष्ण ही रहेगी। और जिसके बिना कोई वस्तु रह सकती है वह उसका धर्म नहीं कहा जा सकता। हो सकता है, कुछ काल के लिये

विरोधी कारण की प्रबलता होने से हमें किसी पदार्थ के धर्म की प्रतीति न हो किन्तु धर्म-धर्मी का सर्वथा परित्याग कदापि नहीं कर सकता।

उदाहरणार्थ जल को ले लीजिये। शीतलता जल का धर्म है। शीतलता की अपेक्षा उष्णता का संयोग होने से चाहे हमें शैत्य की प्रतीति कुछ काल तक न हो

किन्तु अपनी स्वाभाविक अवस्था में जल शीत ही रहेगा। इसी प्रकार समाज अपने धर्म का परित्याग कर जीवित नहीं रह सकता। इससे यह सिद्ध हुआ कि मानव-धर्म यूरोप, अमेरिका और भारत सभी देशों के अधिवासियों पर समान रूप से लागू होगा। आज से करोड़ों वर्ष पूर्व और करोड़ों वर्ष पश्चात् धर्म में कोई अन्तर नहीं हो सकता। जिसमें अन्तर होगा वह धर्म या मानव-धर्म कदापि नहीं कहा जायगा।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें साधारणतया धर्म संज्ञा दे दी जाती है। जैसे युगधर्म, देशधर्म इत्यादि। ऐसे स्थलों पर धर्म कर्त्तव्य के अर्थ में व्यवहृत होता है। इन्हें यदि धर्म के भेद मान लें तो भी कोई हानि नहीं। इस प्रकार से धर्म के अनेक भेद किये जा सकते हैं किन्तु उन स्थानों पर धर्म का प्रयोग औपचारिक ही माना जायगा। जिस प्रकार साहित्य शब्द व्यापक वाङ्मय का मुख्य बोधक होने पर भी काव्य नाटकादि का बोध कराता है उसी प्रकार धर्म शब्द विश्व धर्म का बोध कराते हुए भी संकुचित अर्थ में देशकालादि परिस्थितियों का भी बोध करायेगा।

तब प्रश्न उठता है कि प्रचलित अनेक मत-मतान्तरों की गणना किस धर्म में की जाय? वास्तव में जिन्हें धर्म कहते हैं उनमें निहित सिद्धान्तों के दो रूप हैं। कला और विज्ञान। उनका एक भाग निश्चित सत्य को शिव और सुन्दर रूप में अभिव्यक्त करता है। कला एक निश्चित सत्य है जिसमें विवाद का कोई स्थान नहीं। वही धर्मतत्व है। ऐसे धर्मतत्व प्रत्येक मत में यत्र-तत्र छिटपुट बिखरे रहते हैं। किसी में कम और किसी में अधिक। दूसरा भाग विज्ञानपन का है जो व्याख्यात्मक है। इसके द्वारा हम कला तक पहुँचने का उद्योग करते हैं। विज्ञान पूर्ण और अपूर्ण दोनों अवस्थाओं में विद्यमान रह सकता है। उसकी पूर्णता ही कला है। अतः विज्ञान द्वारा निश्चित तथ्य सर्वसम्मत होता है। किन्तु निश्चय के पूर्व वह सर्वसम्मत नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक कला का सम्बन्ध है, संसार के सभी मत ऐकमत्य हैं। किन्तु विज्ञान भाग में मतभेद है। ऐकमत्य के भाग को धर्म और शेष को मत कहना चाहिये। जिस मत में ऐसे निश्चित सिद्धान्तों की जितनी ही अधिकता होगी वह उतना ही धर्म के समीप होगा और जितनी न्यूनता होगी उतना ही दूर। जिसमें निश्चित किये सिद्धान्त पूर्णतया कला के रूप में होंगे या कहिये जिसमें कला एवं विज्ञान दोनों पक्षों की पूर्णता होगी वह पूर्ण-धर्म कहा जायगा।

इस दृष्टि से विचार करने के पश्चात् संसार के धर्मों में अपूर्णता का अंश अधिक और पूर्णता का अंश कम होने के कारण उन्हें मतों की कोटि में ही स्थान देना पड़ेगा। हाँ! वैदिक धर्म अवश्य पूर्णतया धर्म की कोटि में आ सकता है। क्योंकि इसमें निर्णीत तथ्यों को छोड़ कर अन्य अतर्क-प्रतिष्ठ बातों का समावेश नहीं है। यों तो संसार में प्रायः मतभेद रहता ही है और वैदिक धर्म के भी सारे सिद्धान्त सभी देशों के विद्वानों द्वारा उसी रूप में पूर्णतया स्वीकृत नहीं किये गये हैं तथापि संसार के प्रमुख विद्वानों द्वारा, जिनमें वैदिक और अवैदिक सभी धर्मों के विद्वान् सम्मिलित हैं, इतना तो कम से कम स्वीकार कर ही लिया गया है कि वैदिक धर्म सर्वप्राचीन, सत्य के सर्वाधिक समीप एवं मान्य है। इसी पूर्णता के कारण हम वैदिक धर्म को धर्म तथा अन्य धर्मों को मत कहने के लिये बाध्य हैं।

प्रभुदयाल अग्निहोत्री 'विनोद'
साभार- वैदिक धर्म

भारत के उज्ज्वल इतिहास में नैतिकता के कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग

जब हम भारत के उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें सैकड़ों नहीं सहस्रों प्रसंग ऐसे मिलते हैं, जिनसे हमें भारत का इतिहास, नैतिकता व सच्चरित्रता में सबसे ऊँचा दिखाई देता है। यहाँ इस लेख में कुछ प्रसंगों को प्रस्तुत करके हम इस विषय की सम्पुष्टि करेंगे।

१. सबसे पहले हम रामायण काल के इस प्रसंग से आरम्भ करते हैं, जब श्रीराम व लक्ष्मण सीता माता की खोज में जगह-जगह ढूढ़ते हुए किष्कन्धा पर्वत के पास पहुँचे। जहाँ सुग्रीव व हनुमान बैठे मन्त्रणा कर रहे थे। सुग्रीव ने जब दो युवकों को संन्यासी भेष में अपनी ओर आते देखा तो उसने हनुमान जी को उनके आने का कारण पूछने के लिए भेजा। हनुमान जी नीचे उतर कर श्रीराम और लक्ष्मण से आने का कारण पूछा। श्रीराम ने अपने आने का विस्तार पूर्वक कारण बता दिया। तब हनुमान जी ने कहा कि किसी माता को लेकर रावण हवाई मार्ग से जा रहा था। माता जी रो रही थीं और कुछ गहने उसने हमको बैठा देखकर फेंके थे, वह गहने हमारे पास हैं। दोनों ऊपर चलो और उन गहनों को पहचान कर ले लो। वे हनुमान जी के साथ पर्वत पर चले गये। पहले तो सुग्रीव से मिले फिर उन गहनों को देखा जो सीता माता ने फेंके थे। गहनों को देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण! जरा इन गहनों को तो देखो, क्या यह गहने तुम्हारी भाभी जी के हैं। तब लक्ष्मण ने जो कहा, सच्चचरित्र का इतना उच्चतम् आदर्श संसार के इतिहास में खोजने से भी नहीं मिलेगा। लक्ष्मण ने कहा भैया! मैं तो सीता माता के पैरों के गहने ही पहचान कर सकता हूँ कारण प्रातःकाल उठकर मैं भाभीजी के पैरों को छूकर नमस्ते करता था, तब मेरी दृष्टि पैरों पर तो पड़ती थी इसलिए पैरों के गहने तो मैं अवश्य ही देखता था, पर बाकी चेहरे के, माथे के, गले के और हाथों के गहनों को तो मैं नहीं पहचान सकूँगा। कारण मैंने भाभीजी का चेहरा, गला, हाथ तो कभी देखे ही नहीं है। ऐसे ऊँचे चरित्र के कारण ही भारत का चरित्र आज भी महान् कहलाता है।

२. दूसरा प्रसंग भी रामायण काल का ही है। जब श्रीराम ने अपनी पूरी तैयारी लंका में प्रवेश करने की कर ली थी। हनुमानजी लंका जाकर सीता माता से मिलकर तथा लंका के पूरे भेद लेकर आये थे तब रावण का छोटा भाई विभीषण श्रीराम से मिलने के लिए आया। तब श्रीराम की यह दूरदर्शिता थी कि वे समझ गये कि विभीषण, अपने भाई रावण से नाराज होकर मेरे पास आया है और युद्ध में मेरे यह बहुत काम आयेगा। इसलिए श्रीराम ने, विभीषण को देखते

ही कहा 'आओ लंकेश, आओ।' तब लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा, भैया! आपने विभीषण को पहले ही लंकेश कैसे कह दिया? अभी तो रावण से युद्ध शुरू हुआ ही नहीं हुआ है और न ही कोई हार-जीत हुई है। तब श्रीराम ने जो बात कही वह भी स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। यह श्रीराम के अपने वचनों का पालन करने के लिए महान् त्याग को दर्शाता है। श्रीराम ने कहा सुनो लक्ष्मण ! पहली बात तो यह है कि हम न्याय और सत्य पर हैं, रावण अन्याय और असत्य पर है। न्याय और सत्य की सदैव जीत होती है। इसलिए हमारी जीत निश्चित है और जीतने पर विभीषण को राजा बनायेंगे ही तब लंकेश कह देना कोई भूल नहीं है। यदि दुर्भाग्यवश हमारी हार हो जाती है, तो अयोध्या का राजा तो मैं हूँ ही। मैं विभीषण को अपना अयोध्या का राज्य दे दूँगा। लंका और अयोध्या में कोई विशेष अन्तर नहीं है। ऐसा उत्तर भारत के इतिहास में ही है, अन्य देशों के इतिहास में मिलना असम्भव है।

३. यह प्रसंग महाभारत काल का है। जब पाँचों पाण्डव जुए में हार कर जंगल में विचरण कर रहे थे तब उनको बड़ी प्यास लगी, तब युधिष्ठिर ने एक बर्तन देकर अपने सबसे छोटे भाई सहदेव को पानी लाने के लिए कहा। सहदेव कई जगह खोजते हुए एक तालाब के पास पहुँचा, जिसकी रक्षा एक यक्ष कर रहा था। यक्ष ने सहदेव के कहा कि पानी लेने से पहले तुमको मेरे प्रश्नों का उत्तर देना पड़ेगा। यदि

उत्तर सही दिये तो पानी ले सकोगे और यदि उत्तर नहीं दे सके तो तुम्हें मूर्छित कर दूँगा। सहदेव सही उत्तर नहीं दे सका और यक्ष ने उसे मूर्छित कर दिया। काफी देर तक जब सहदेव नहीं पहुँचा तो युधिष्ठर ने नकुल को पानी लेने भेजा। नकुल भी उसी तालाब के पास पहुँचा। उससे भी यक्ष ने अपने प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा। उत्तर न दे पाने पर उसे भी मुर्छित कर दिया। नकुल के भी काफी देर तक न पहुँचने पर अर्जुन को भेजा। यही घटना अर्जुन के साथ भी घटी। अर्जुन के न पहुँचने पर भीम को भेजा। भीम के साथ भी यही घटना घटी। चारों भाईयों को यक्ष ने मूर्छित कर दिया। भीम के भी न पहुँचने पर अन्त में स्वयं युधिष्ठर पानी लेने के लिए गये और उसी तालाब के पास पहुँचे। युधिष्ठर को भी यक्ष ने अपने प्रश्नों के उत्तर देकर ही पानी लेने के लिए कहा। युधिष्ठर यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार हो गये। और यक्ष ने लगभग पन्द्रह प्रश्न किये जिनमें मुख्य तीन प्रश्न ये थे- (१) पृथ्वी से बड़ा कौन है? (२) आकाश से ऊँचा कौन है? (३) सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? युधिष्ठर ने प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि- पृथ्वी से बड़ी माता है, आकाश से ऊँचा पिता है और तीसरे प्रश्न के उत्तर में कहा कि दुनिया का हर आदमी रोजाना मरने वालों को जाते हुए देखता है, पर वह यह समझता है कि मैं कभी नहीं मरूँगा और बुरे कर्म करता रहता है। इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है। प्रश्नों का उत्तर सुनकर यक्ष बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला कि मैं आपके चारों भाईयों में से किसी एक को जीवित कर सकता हूँ, तब युधिष्ठर ने कहा कि हम दो माताओं के पुत्र हैं एक कुन्ती दूसरी माद्री। कुन्ती का सबसे बड़ा पुत्र मैं हूँ और माद्री का बड़ा पुत्र नकुल है, सो आप नकुल को जीवित कर देवें। जिससे दोनों माताओं को एक-एक पुत्र रह जायेगा। यह न्यायोचित बात सुनकर यक्ष बड़ा प्रसन्न हुआ और चारों भाईयों को, जो मूर्छित थे, उनको दवा पिलाकर जीवित कर दिया। यह घटना युधिष्ठिर को धर्मराज कहलाने में बड़ी सहयोगी सिद्ध हुई है।

४. एक चौथा प्रसंग अभी चार सौ वर्ष पहले का शिवाजी महाराज के जीवन का है। शिवाजी महाराज

एक साहसी, बलवान, कूटनीतिज्ञ व एक कुशल नेता के साथ-साथ एक महान् चरित्रवान व्यक्ति भी थे। उन्होंने अपनी माता जीजा बाई से बड़ी ऊँची-ऊँची धार्मिक व चारित्रिक शिक्षाएँ पाई थीं। उनके जीवन की एक घटना है कि उनके सैनिकों को घूमते-फिरते एक बहुत सुन्दर मुस्लिम युवा लड़की मिल गई। सैनिकों ने समझा कि इस लड़की को हम अपने महाराज शिवाजी महाराज के एक तोहफा के रूप में देवेंगे तो वे बहुत खुश होवेंगे और हमको काफी इनाम देवेंगे। यही सोचकर वे सैनिक इस लड़की को शिवाजी महाराज के पास ले जाकर कहा कि महाराज! हम आपके लिए एक बहुत बढ़िया तोहफा लेकर आये हैं और उस लड़की को शिवाजी के सामने प्रस्तुत कर दिया। शिवाजी की आँखें लाल हो गईं और अपने सैनिकों से कहा कि आप लोग अभी तक भी अपने राजा को नहीं समझ पाये हैं। मैं हिन्दू राजा हूँ, हमारे धर्म में बड़ी स्त्री को माता, बराबर वाली को बहन और छोटी को पुत्री के समान समझा जाता है। यह मेरी पुत्री है और अपने पिता जी से मिलने आई है। इसलिए मेरा कर्तव्य है कि इसको कुछ गहने-कपड़े देकर मैं विदा करूँ। और उसी समय कुछ गहने व कपड़े मंगवाकर उस मुस्लिम बेटी को ससम्मान विदा किया। यह सच्चरित्रता की एक पराकाष्ठा थी।

५. यह प्रसंग महामन्त्री चाणक्य का स्वयं का है। जब वह मगध के महाराजा महानन्द द्वारा किये गये अपमान से दुःखित होकर इस प्रतिज्ञा के साथ बाहर आ गये कि मैं इस राजा का सर्वनाश करके ही रहूँगा और उसने एक विलक्षण बुद्धि वाले बालक चन्द्रगुप्त को अपने पास रखकर उसको अस्त्र-शस्त्र विद्या सिखलाकर उसके द्वारा मगध के राजा महानन्द को हराकर चन्द्रगुप्त को मगध का एक महान् प्रतापी राजा बनाकर, राजा महानन्द के विशाल राज्य का सर्वनाश करके चाणक्य ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। चन्द्रगुप्त के राज्य का महामंत्री स्वयं ही बनकर जंगल में एक कुटिया बनाकर रहने लगा। राज्य का सारा काम-काज जंगल में बैठकर ही सम्भालता था और राज्य की व्यवस्था इतनी सुन्दर व सुदृढ़ बना रखी थी कि कोई भी राजा उसके राज्य पर आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं कर सकता था। इसलिए प्रजा बड़ी सुखी व 'खुशहाल' थी। यह निश्चित है, जब किसी राज्य का महामंत्री कुटिया में रहकर प्रजा की देख-भाल करेगा तो उसकी प्रजा महलों में रहकर अवश्य ही सुख की नींद सोवेगी।

इन प्रसंगों से आज के हमारे राजा, मंत्री, सांसद व विधायकों को शिक्षा लेनी चाहिए ताकि वे भी अपने पूर्वजों की भाँति अपना चरित्र बनावें, तभी हमारा देश स्वतः उन्नति और समृद्धि के शिखर पर पहुँचेगा और 'यथा राजा यथा प्रजा' के अनुसार प्रजा भी चरित्रवान् बनेगी और हमारा देश भारत पुनः 'विश्वगुरु' कहलावेगा।

– गोविन्दराम एण्ड सन्स
१८०, महात्माम गाँधी रोड, दो तल्ला
कोलकाता- ७००००७

स्वास्थ्य

कोरोनरी स्टेनोसिस, जिसे कोरोनरी धमनी रोग (सीएडी) के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी स्थिति है जिसमें आपके हृदय को रक्त की आपूर्ति करने वाली धमनियाँ संकीर्ण या अवरुद्ध हो जाती हैं। यह आमतौर पर प्लाक (Plaque) के निर्माण के कारण होता है, जो कोलेस्ट्रॉल, वसा और अन्य पदार्थों से बना होता है।

हालाँकि कोरोनरी स्टेनोसिस का कोई इलाज नहीं है, लेकिन स्थिति को प्रबन्धित करने और आपके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद के लिए उपचार उपलब्ध हैं। कुछ मामलों में, कोरोनरी स्टेनोसिस से होने वाली कुछ क्षति को उलटना सम्भव हो सकता है।

यहाँ कुछ चीजें हैं जो आप कोरोनरी स्टेनोसिस को प्रबन्धित करने और सम्भावित रूप से कुछ क्षति को उलटने में मदद के लिए कर सकते हैं:

* **जीवनशैली में बदलाव करें:** इसमें स्वस्थ आहार खाना, नियमित व्यायाम करना, धूम्रपान छोड़ना और स्वस्थ वजन बनाए रखना शामिल है।
* **दवाएँ लें:** आपका डॉक्टर आपके कोलेस्ट्रॉल, रक्तचाप और रक्त के थक्कों के जोखिम को कम करने में मदद करने के लिए दवाएँ लिख सकता है।
* **प्रक्रियाओं से गुजरें:** कुछ मामलों में, आपका डॉक्टर अवरुद्ध धमनियों को खोलने के लिए एक प्रक्रिया की सिफारिश कर सकता है। इसमें एंजियोप्लास्टी या स्टेंटिंग शामिल हो सकती है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कोरोनरी स्टेनोसिस वाला हर व्यक्ति क्षति को उलटने में सक्षम नहीं होगा। हालाँकि, जीवनशैली में बदलाव करके और अपने डॉक्टर की सिफारिशों का पालन करके, आप बीमारी की प्रगति को धीमा करने और अपने समग्र स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

कोरोनरी स्टेनोसिस को प्रबन्धित करने में मदद के लिए यहाँ जीवनशैली में कुछ विशिष्ट बदलाव किए जा सकते हैं, जो नीचे दिए जा रहे हैं:

* **स्वस्थ आहार लें:** इसमें भरपूर मात्रा में फल, सब्जियाँ और साबुत अनाज खाना शामिल है। आपको संतृप्त और अस्वास्थ्यकर वसा, कोलेस्ट्रॉल और सोडियम का सेवन भी सीमित करना चाहिए।
* **नियमित व्यायाम करें:** सप्ताह के अधिकांश

दिनों में कम से कम ३० मिनट की मध्यम तीव्रता वाला व्यायाम करने का लक्ष्य रखें।

❋ **धूम्रपान छोड़ें:** हृदय रोग के लिए नशाखोरी और धूम्रपान प्रमुख जोखिम कारक हैं। यदि आप धूम्रपान करते हैं, तो इसे छोड़ना आपके स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छी बात है।

❋ **स्वस्थ वजन बनाए रखें:** अधिक वजन या मोटापा होने से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। थोड़ा सा वजन कम करने से भी आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको कोरोनरी स्टेनोसिस का निदान किया गया है, तो आपके लिए सर्वोत्तम उपचार विकल्पों के बारे में अपने डॉक्टर से बात करना महत्वपूर्ण है। साथ मिलकर, आप स्थिति को प्रबंधित करने और अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद के लिए एक योजना विकसित कर सकते हैं।

– अन्तर्जाल

शोक संदेवना

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के मंत्री डॉ. वेदमित्र आर्य जी के बड़े भ्राता डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी का दिनांक २४ जनवरी २०२५ को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी अत्यन्त सरल, दयालु, मिलनसार एवं विनम्र स्वभाव के धनी थे। उनकी परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में रुचि थी। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार उनके निधन पर संवेदना प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

भजनोपदेशक श्री सरल अब हमारे मध्य नहीं रहे।

आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल का असामयिक निधन हो गया है। श्री सरल प्रसिद्ध भजनोपदेशक होने के साथ-साथ आर्य समाज व ऋषि मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में सदैव सक्रिय रहे एवं समय-समय पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यक्रमों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार उनके निधन पर संवेदना प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

स्वामी जी जब आरा में पहुँचे तो वहाँ उनका आतिथ्य सत्कार मुंशी हरवंश लाल वकील और बाबू रजनीकान्त मुखोपाध्याय ने किया।

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि द्विजों की रसोई में पाचक का कार्य शूद्र किया करें। इस कथन को पढ़कर के बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी जी जिसको शूद्र कह रहे हैं वह कदापि अस्पृश्य नहीं है। जिस व्यक्ति को वे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि लोगों की रसोई में पाचक का कार्य सौंप रहे हैं वह अछूत कैसे हो सकता है? स्वामी जी के इन विचारों की पुष्टि उनके आरा प्रवास में भी होती है। बाबू रजनीकान्त मुखोपाध्याय के प्रयास से आरा के जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर एलेक्जैंडर से स्वामी जी की भेंट हुई। वार्तालाप अनेक विषयों पर हुआ। संस्कृत के महत्व के साथ जब वर्णाश्रम धर्म की बात हुई तब भी स्वामी जी ने यही कहा कि पहले ब्राह्मण पाचक का कार्य नहीं करते थे। पाचनकर्म, सेवाकर्म है और सेवा शूद्र का कार्य है। पहले समय में भोजन बनाने का कार्य शूद्र ही किया करते थे।

जैसा हम इस जीवनी में उन स्थलों को विशेष रूप से अंकित करते जा रहे हैं जहाँ पर स्वामी जी ने अनायास ही जो कहा अथवा किया उससे उनकी योगज सिद्धि का पता चलता है, ऐसी ही एक घटना पटना प्रवास में हुई, उसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है। पटना में उन्होंने एक विद्यार्थी राजनाथ को अपने साथ रहने और रसोई आदि बनाने की स्वीकृति दी। एक बार शाम के समय जब यह राजनाथ दूध और मिश्री लेकर कहीं से वापस स्वामी जी के डेरे की ओर लौट रहा था तो रास्ते में अंधेरा हो गया कुछ बरसात भी हो रही थी। रास्ते में राजनाथ ने एक सर्प को देखा फिर पीछे देखा तो वहाँ भी एक और सर्प था जिसे देखकर के वह बहुत डर गया। आँख मून्द कर भगवान का नाम लेकर राजनाथ ने सर्प के ऊपर से छलांग लगाई और भागता हुआ अपने गन्तव्य की ओर चल दिया। थोड़ी देर जाकर रुक करके जब वह स्वस्थ हुआ तो स्वामी जी के पास पहुँच गया। स्वामी जी ने उसे देखकर कहा कि क्या मार्ग में तू डरा था और क्या तूने सर्प देखा था? राजनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि स्वामी जी ने यह वृत्त कैसे जान लिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी जी के जीवन में ऐसी छोटी-छोटी अनेक घटनाएँ आती हैं, जो उनकी योगज सिद्धि की ओर संकेत करती हैं। यहीं पर एक घटना और घटी। एक बार स्वामी जी जब जंगल गए थे तो उनका रसोईया उनके लिए खाना बना रहा था। इस मध्य रसोईया का चाचा आया और उसने पूछा कि जब स्वामी जी खा लेते होंगे तुम तो तब खाते होगे? उसने हाँ कहा। तो चाचा बोला इससे तो चौका झूठा हो गया। तुम लकीर खींचने का नियम बना लिया करो, तब ठीक रहेगा। उस दिन जब स्वामी जी आए तो चौक के अन्दर बैठकर उन्होंने भोजन नहीं किया। वे बाहर ही बैठ गए और वहीं भोजन किया। पाचक ने कहा आप आज चौक के बाहर क्यों बैठते हो? स्वामी जी ने कहा हमें किसी बिरादरी का भय नहीं है कि कोई हमें बिरादरी से निकाल देगा। पाचक को यह आश्चर्य हो रहा था कि चाचा और उसके बीच में हुई बातें स्वामी

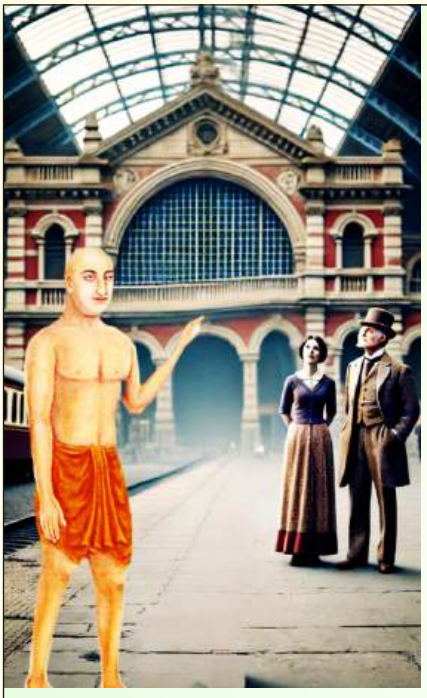

जी को कैसे पता चली?

स्वामी जी की निर्भीकता भी जग प्रसिद्ध है। मुंगेर स्टेशन पर वे जब कौपीन मात्र में टहल रहे थे तो एक अंग्रेज साहब और उनकी मेम साहिबा वहाँ गाड़ी से उतरे और जब एक संन्यासी को मात्र कौपीन में देखा तो गुस्से से आग बबूला हो गए और स्टेशन मास्टर को बुलाकर के कहा कि इनको बाहर निकाल दो। स्टेशन मास्टर स्वामी दयानन्द को जानता था। उसने जाकर स्वामी जी को केवल इतना कहा कि अभी गाड़ी छूटने में देर है आप तब तक बैठ जाइए। स्वामी जी समझ गए कि असल बात क्या कहना चाहता है। **उन्होंने कहा कि जाकर अपने साहब को कह दो कि हम उस जमाने के हैं जब उनके पूर्वज आदम और हब्बा अदन के बाग में नंगे घूमने में कोई लज्जा का अनुभव नहीं करते थे।** अब यह बात तो अंग्रेज साहब से स्टेशन मास्टर कह नहीं सकता था। उसने यही कहा कि यह कोई भीखमंगा नहीं है जिसे मैं बाहर निकाल दूँ। तो अंग्रेज साहब ने पूछा कि यह कौन है? तब स्वामी दयानन्द का परिचय स्टेशन मास्टर ने दिया। स्वामी जी का नाम तब तक काफी विख्यात हो चुका था। साहब के मुँह से हटात् निकला क्या यह प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द हैं? उसके पश्चात् वह स्वयं स्वामी जी के पास गया और जब तक गाड़ी छूटने का समय नहीं हुआ उनसे बातचीत करता रहा।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 336/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

G Pay
BHIM UPI

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

– सम्पादक

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्‌भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
BHIM UPI

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म जयंती पर भव्य आयोजन
सत्य के लिए दौड़ में उमड़े शहरवासी

उदयपुर के फतहसागर के प्रातः काल के सुरम्य वातावरण में, चेहरे पर मधुर मुस्कान और आभा, आँखों में आशा और विश्वास मन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के पद चिह्नों पर चल कर पूरे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाने की चाह और संकल्प। यह दृश्य है श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा २३ फरवरी २०२५ को महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में फतहसागर की पाल पर रविवार प्रातः आयोजित 'रन फॉर ट्रुथ' के भव्य आयोजन का, जिसमें बड़ी संख्या में शहरवासियों ने उत्साह से भाग लेकर महर्षि द्वारा प्रतिपादित सत्य की शक्ति को जीवन के आचरण में लाने का संकल्प लिया।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रति समर्पित थे सत्य से उन्होंने कदापि समझौता नहीं किया। अतः सत्य के प्रति निष्ठा के भाव संचारित करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया और इसीलिए इसका नाम 'सत्य के लिए दौड़' रखा गया। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की युवा शाखा की संयोजिका ऋचा पीयूष ने बताया कि फाल्गुन बदी दशमी कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् १८८१ को मौरवी राज्य के टंकारा ग्राम में जन्मे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म जयन्ती के अवसर पर आयोजित सत्य के लिए इस दौड़ के आयोजन के आरम्भ में प्रातः ७:०० बजे प्रतिभागियों के लिए टी-शर्ट वितरित की गई। जिसे पहन कर बच्चे, युवा, प्रौढ़ सभी आयुवर्ग के प्रतिभागियों ने योग शिक्षक भारत श्रीमाली के मार्गदर्शन में दौड़ के लिए उपयोगी सूक्ष्म व्यायाम और योगाभ्यास कर स्वयं को दौड़ के लिए तैयार किया। निर्धारित समय पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आनन्द गुप्ता; अध्यक्ष इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन एवं निदेशक अरावली अस्पताल द्वारा 'ओ३म् ध्वज' फहराकर दौड़ का आरम्भ करवाया गया। दौड़ हेतु फतहसागर की फिश एक्वेरियम से फतेहसागर की काली फाटक तक पहुँचकर पुनः लौटने के लक्ष्य हेतु रवाना प्रतिभागी महर्षि दयानन्द सरस्वती की जय, भारत माता की जय आदि जयघोष

लगाते रहे। दौड़ आरम्भ होते ही कार्यक्रम स्थल पर वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ न्यास के पुरोहित नवनीत आर्य के पौरोहित्य और संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया के मार्गदर्शन में यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य और आभा आर्या रहे। यज्ञ से सुगन्धित हुए वातावरण से आकर्षित होकर फतहसागर की पाल पर उपस्थित आमजन ने भी श्रद्धापूर्वक गायत्री महामंत्र और महामृत्युञ्जय मंत्र के उच्चारण के साथ यज्ञ में आहुतियाँ दीं।

न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य ने कहा कि उदयपुर के गुलाब बाग स्थित

नवलखा में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा महाराणा सज्जन सिंह के आमंत्रण पर साढ़े छः माह रहकर अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। उन्होंने उदयपुर की उस घटना का भी उल्लेख किया जिसमें महाराणा द्वारा महर्षि के सत्य के प्रतिपादन में पार्थिव पूजा के विषय पर मौन रहने पर मेवाड़ के आध्यात्मिक आसन पर शासन का प्रस्ताव दिया गया था जिसे महर्षि ने यह कहकर अस्वीकार किया कि वे महाराणा की बात ना मानकर मेवाड़ राज्य से तो एक दौड़ में बाहर निकल सकते हैं लेकिन ईश्वर की बात ना मानकर ईश्वर के राज्य से कैसे बाहर निकल सकते हैं। न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य ने आयोजक मण्डल की ओर से दौड़ में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों का आभार किया। दौड़ को सफलतापूर्वक पूरी करने वाले सभी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा मेडल पहना कर अभिनन्दन किया गया। मुख्य अतिथि ने कहा कि हमें दैनिक दिनचर्या में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए दौड़ को सम्मिलित करना चाहिए।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र , युवा प्रकोष्ठ के जयेश पीयूष, चिरायु पीयूष, आदर्श गर्ग, कपिल सोनी, भाग्यश्री शर्मा, उषा चौहान, हेमेन्द्र चौहान, मनीष शर्मा, हेमन्त प्रजापत, डॉ. प्रशान्त अग्रवाल, डॉ. प्रिया अग्रवाल, सुकृत मेहरा, संध्या मेहरा, शीतल गुप्ता एवं नवलखा सहयोगी भँवर लाल गर्ग, दुर्गा गोरमात, करिश्मा शर्मा, सिद्धम आर्य, लोकेश, देवीलाल, दिव्येश सुथार आदि ने सम्पूर्ण आयोजन के क्रियान्वयन में अग्रणी भूमिका निभाई।

इस अवसर पर न्यास मंत्री भवानी दास आर्य, शारदा गुप्ता, ललिता मेहरा, डॉ. एस.के. माहेश्वरी, आर्य समाज हिरण मगरी के भँवरलाल आर्य, वेद मित्र आर्य, रमेश चन्द्र जायसवाल, कृष्ण कुमार सोनी, इन्द्र प्रकाश यादव, भूपेन्द्र शर्मा, दयानन्द कन्या विद्यालय की निदेशक पुष्पा सिन्धी एवं अध्यापिकाएँ, छात्राएँ, आर्यसमाज पिछोली के प्रकाश श्रीमाली, विभिन्न आर्य समाज के आर्यजन और आमजन कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

अब साइबर सिपाही भी

आपने गत एक दो वर्षों में विशेष रूप से सुना होगा कि साइबर अपराध बढ़ते जा रहे हैं अर्थात् इण्टरनेट के माध्यम से और जो इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स हैं उनके द्वारा व्यक्ति को अनेक प्रकार से ठगा जा रहा है। यहाँ तक कि हमने एक सम्पादकीय में डिजिटल अरेस्ट के बारे में विशेष रूप से लिखा था। साइबर अपराध के विस्तार का आलम यह है कि अच्छे खासे पढ़े-लिखे व्यक्ति भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। तो फिर अनपढ़ लोगों का क्या कहना? पिछले वर्ष करोड़ों रुपए लोगों के, इस माध्यम से ठगे गए। आपने प्रायः समाचारों में यह भी सुना होगा कि फलाँ-फलाँ स्थान पर अचानक से उपद्रव हो गया और फिर छानबीन हुई तो पता चला कि यह प्लानिंग काफी दिनों से चल रही थी। कहाँ चलती है यह प्लानिंग? इण्टरनेट की दुनिया में। अब ये साइबर सिपाही चुपचाप इन सब लाखों करोड़ों सूचनाओं को एप की मदद से इकट्ठा करेंगे विश्लेषण करेंगे और कहीं भी देश, राष्ट्र के विरुद्ध कोई साजिश हो रही है तो उसका पर्दाफाश भी करेंगे और सम्बन्धित अधिकारियों तक उसकी जानकारी पहुँच जाएगी और बहुत सम्भव है कि वास्तविक अपराध को घटित होने से पहले रोक लिया जाए। ऐसा हो सका तो यह बहुत बड़ी तकनीकी विजय होगी अपराधों के रोकथाम में।

अब साइबर इन्श्योरेंस भी

इन्श्योरेंस के बारे में तो आप सभी जानते हैं। व्यक्ति अपने जीवन का बीमा कराता है। बीमा चिकित्सा के समय उसे जो आवश्यकता होती है उसकी भी प्रतिपूर्ति करता है। अपने घर, व्यवसाय, ऑफिस

आदि-आदि अनेक प्रकार के इन्श्योरेंस आप प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु अब नया बीमा साइबर ठगी के बीमा का सामने आ रहा है। साइबर ठगी के विरुद्ध भी आपको सुरक्षित करने का ठेका बीमा कम्पनियों ने उठा लिया है और आपका साइबर बीमा किया जा रहा है। जिसमें ऑनलाइन आपसे कोई ठगी होती है, आपसे कोई रुपया वसूला जाता है या अन्य प्रकार की हानियाँ होती हैं तो उसकी प्रतिपूर्ति बीमा कम्पनी द्वारा की जाएगी। इसके स्कोप के हिसाब से ही इसका वार्षिक प्रीमियम होता है जो कि रुपया ७०० से लेकर के रुपया ३००० तक अभी भारत वर्ष में है। इनमें यहाँ तक भी सम्मिलित है कि ठगी के कारण अगर आप मानसिक अवसाद से ग्रस्त हुए हैं तो उसकी चिकित्सा में जो व्यय होगा उसकी भी प्रतिपूर्ति की जाएगी।

आर्य समाज द्वारका के भवन का शिलान्यास

दिनांक २३ फरवरी २०२५ को आर्य समाज द्वारका दिल्ली के भवन का शिलान्यास हुआ। इस अवसर पर सम्पन्न यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वागीश शर्मा जी थे। समारोह में आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री सतीश चड्ढा, श्री जोगिंदर खट्टर, श्री अशोक गुप्ता आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली द्वारा भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

आर्य समाज; द्वारका के प्रधान डॉ. आनन्द शर्मा ने बताया कि इस शुभ अवसर पर स्वर्गीय चन्द्र मोहन आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना आर्य जी व उनके सुपुत्र श्री परीक्षित आर्य जी उपस्थित थे।

आर्य समाज के मंत्री श्री विनोद कालरा ने सभी व्यवस्थाएँ अत्यन्त सुचारु रूप में की। आर्य समाज द्वारका के सभी पदाधिकारियों को श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई।

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत
प्रामाणिक राम चरित्र

भगवान श्री राम का
प्रामाणिक जीवन चरित्र

शुद्ध रामायण

प्रक्षेपों का
सप्रमाण निराकरण

तर्क, बुद्धि, विज्ञान और
इतिहास, के आधार पर
जानें, मानें और अनुसरण
करें भगवान श्री राम के
पावन चरित्र का

आचार्य प्रेमभिक्षु

Best seller from Acharya Prembhikshu

Hard bound ₹320 Paper' back ₹250

Order now Free Postage

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास,गुलाब बाग उदयपुर

Contact 9314535379

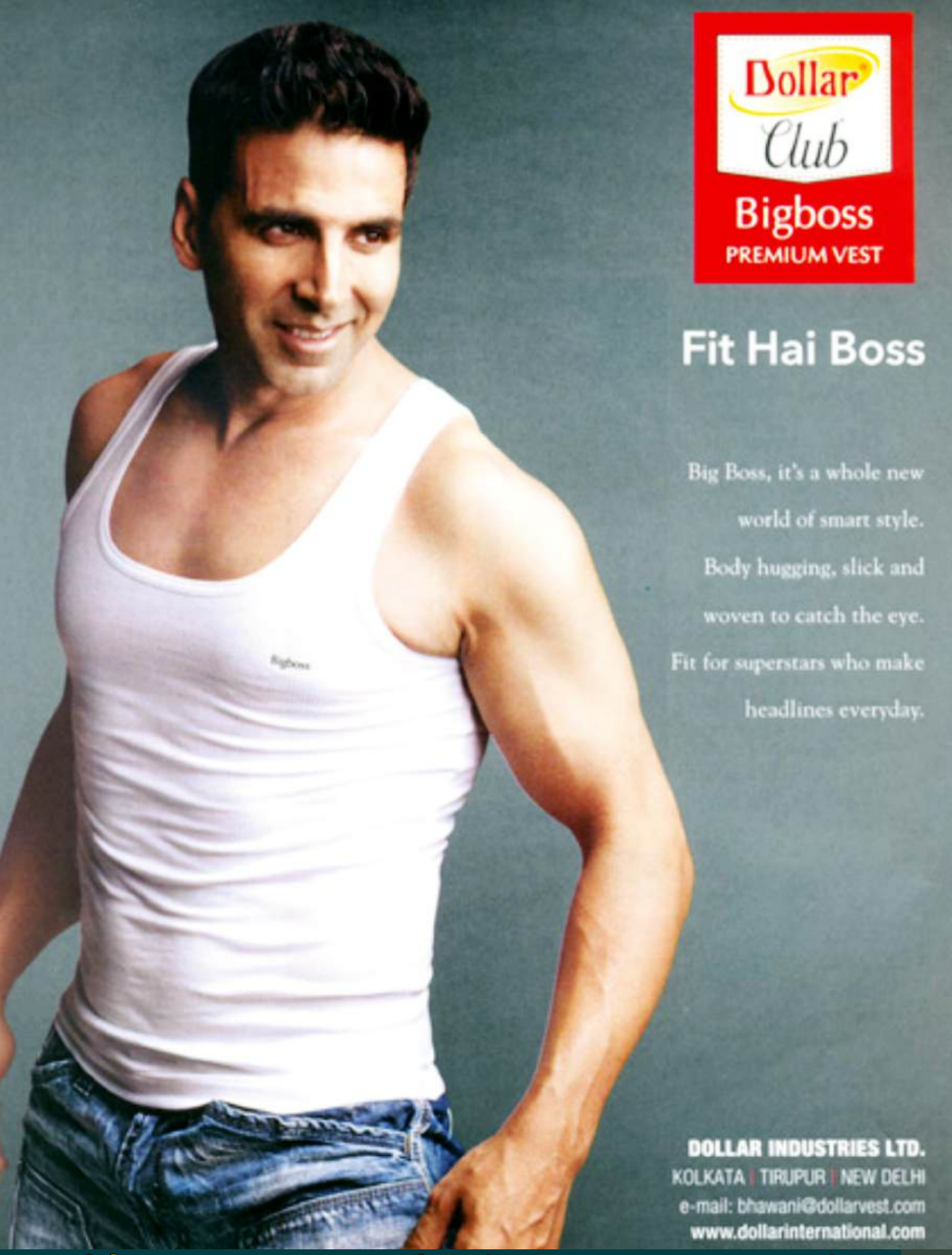

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

(जीव ब्रह्म का प्रतिबिम्ब नहीं है।) क्योंकि प्रतिबिम्ब साकार का साकार में होता है। जैसे मुख और दर्पण आकारवाले हैं और पृथक् भी हैं। जो पृथक् न हो, तो भी प्रतिबिम्ब नहीं हो सकता। ब्रह्म निराकार, सर्वव्यापक होने से, उसका प्रतिबिम्ब नहीं हो सकता।

- सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास पृष्ठ २३४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर